दिव्य आदेश

(भाग आठ)

रामचन्द्र

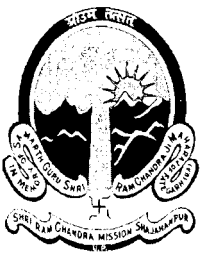

श्री रामचन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

दिव्य आदेश

(भाग आठ)

इरशादात हज़रत क़िब्ला पीर

दस्तगीर श्रीमान रामचन्द्र जी

साहब फ़तहगढ़ी, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद

मन इब्तदाई 2 फरवरी 1948 ई०

लग़ायत 30 जून, 1955 ई०

प्रथम संस्करण - २०१३, ६०० प्रतियाँ

श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्यः रू० 150/-

प्रकाशक :
श्री रामचन्द्र मिशन,
प्रकाशन विभाग,
शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

मुद्रक :खन्ना आर्ट प्रिन्टर्स,
WZ-190, शादीखामपुर,
वेस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली - 110 008.

प्रस्तावना

पूज्य बाबूजी महाराज द्वारा रचित इस पुस्तक को आप सब के सामने लाते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि मैं उनका पोता हूँ जिन्होंने इतना महत्वपूर्ण साहित्य संसार के कल्याण के लिए प्रस्तुत किया। उनकी डायरीयों के रूप में लिखित दिव्य आदेश का आठवाँ व अंतिम भाग आप लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस पुस्तक में 2.2.1948 से 30.6.1955 तक की लिखी हुई डायरी के अंश प्रस्तुत हैं। पिछले भागों की तरह, इस पुस्तक में भी अंग्रेजी भाग हू ब हू जैसे डायरी में लिखा गया है वैसे ही प्रकाशित किया गया है। उर्दू व फारसी का हिन्दी रूपान्तर करने में श्री एम.एम. गुप्ता जी ने शीर्ष भूमिका निभाई है। मेरी माता श्रीमती अमिता कुमारी जी ने इसकी प्रूफरीडिंग की तथा श्री गुरु प्रसाद जी का भी इस पुस्तक को छापने में योगदान रहा।

आप सब को यह विदित है कि पूज्य बाबूजी महाराज द्वारा लिखी गई डायरियों को हम ने दिव्य आदेश के नाम से आज तक सात भागों में प्रकाशित की हैं जिन्हें पढ़कर हम बाबूजी महाराज की महान शक्तियों को पहचान सकते हैं। हम सब की यह उत्सुकता कई सालों से रही कि आठवाँ एवं अंतिम भाग भी पाठकों एवं अभ्यासियों के सामने आये जो आज इस शुभ अवसर पर पूरी हो रही है।

यह 8वाँ भाग हमारे स्वतंत्र भारत की नींव व दुनियाँ की परिस्थितियों से अवगत कराता है। इस में बाबूजी महाराज न केवल 1948 से 1955 की परिस्थितियों का वर्णन किया है एवं आगे आने वाले विभिन्न देशों के बारे में भी अवगत कराया है। इस भाग की खूबी यह भी है कि आगे आने वाली पीढियों को व अभ्यासियों को हमारे सहज मार्ग पद्धति की विशेषताएं व विभिन्न हस्तियाँ जैसे हमारे आदि गुरु लालाजी महाराज के अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द जी, भगवान कृष्ण जी, गौतम बुद्धजी, कबीर

दास जी, चैतन्य महाप्रभु जी, मीरा बाईजी इत्यादि के विचारों को भी बहुत सुन्दर ढ़ंग से व्यक्त किया गया है। इस पुस्तक में अनेक धर्म संस्थापकों के अपने-अपने धर्म के स्थापना के मूल भूत विचार क्या थे और समयानुसार उस आधार शिला को वर्तमान काल में किस तरह क्षति पहुंची है जिसे पूरित करने में सहज मार्ग का योगदान किस तरह रहेगा उन सबके बारे में भी लिखा गया है, जिसे पढ़कर हम सब को सहज मार्ग की विशेषता की गहरी जानकारी मिल सकती है।

बाबूजी महाराज के कर कमलों द्वारा स्वर्णाक्षरों में लिखित इन भाग 1 से 8 में उनके उद्देश्य सिर्फ उस समय की जानकारी और उनके अपने अनुभवों के बारे में सीमित नहीं है वह प्रस्तुत बाबूजी का साहित्य हमारे वर्तमान और भविष्य में आने वाले अभ्यासियों का मार्ग दर्शन का कार्य करेंगी। इन पुस्तकों के हर वाक्य के पीछे छुपे हुए रहस्य को समझना इतना आसान नहीं है जैसे कि बाबूजी महाराज ने कहा था कि जैसे जैसे वक्त गुज़रेगा आगे आनेवाले अभ्यासी ही इस सहज मार्ग को पूर्णतः समझ पायेंगे।

हम सब का यह कर्तव्य बनता है कि इन किताबों में बाबूजी महाराज द्वारा लिखी गई उन महान हस्तियों के विचार को समझे और अपने जीवन में आध्यात्मिकता के महत्व को समझकर अपने गुरु बाबूजी के अशीर्वाद व कृपा दृष्टि को पाकर सहज मार्ग की सहायता से अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होने का प्रयत्न करें एवं यह भी प्रार्थना करें कि अनेकानेक लोग इस मार्ग में बाबूजी के अभ्यासी बनकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करें।

नवनीत कुमार

दिव्य आदेश - भाग - 8

2-2-48

S.V. (Swami Vivekananda): **India** cannot shine out without the weapon you are using. Who succeeded in giving freedom to **India**? Apparently, **Gandhi**. **Gandhi** had will force, no doubt. He exercised his power in bringing the result before you. But was it sufficient? He was doing his business for the last 30 or 40 years. Why did he not succeeded within this period? Reply is plain and simple. He was doing all this with manly power. That is why success did not attend him earlier. People will laugh if I say that there is only **one personality** in existence that deserves congratulations (this thinny fellow). The future prospect depends upon him. See, what **Gandhi** could not do here in **India**, the **Personality** will do for the world. Change, nobody can make but yourself. Even I am powerless and everybody in the **brighter world** has no power to touch this subject. You are assigned, as you know, what for? Nature has meant it to be so. Finish the work of **India** first, then let us see how and on what strength the European countries stand. Let us see their material strength, which they boast of. They have not seen such person in India whose quiet action can finish the whole world. Nobody, I believe, with this power.

There is no record in the past, so the people are in dark. Here the record is being prepared for them to see. On the bones - on the bones - construct - Hurry up - Hurry up.

The world is in mourning but **Churchill** is happy on the sad demise of Gandhiji. I have not seen anybody as black hearted as he (Sir Winston Churchill) is.

ऋषि अगस्तः (working के बारे में कहा) : हालत बहुत बढ़ रहे हैं। मजबूरी है। क़ुदरत का हुक्म यही है।

नोटः 21 जनवरी को जो ड्युटी मिली थी, आज बतारीख़ 3 फ़रवरी दस बजे दिन ख़त्म कर दी गई।)

5-2-48

हज़रत क़िब्लाः गांधी जी की रूह भटक रही है। ऊपर को जाने का इरादा करती है, मगर नहीं जा सकती। क्या liberation हो गया। हरगिज़ नहीं। उन का लगाव था। किसी से हो। Public से ख़्वाह घर वालों से। दोनों सूरतें एक ही हैं। बहुत से reformer गुज़र गये, क्या सब ने liberation हासिल कर लिया। नहीं। यह बात (Reformer होना) बहुत आसान है। किताबें पढ़ लो; ख़ूब study कर लो। नुकात समझ लो। फ़िर क्या, एक लाइन पर काम करना शुरु कर दो। अगर क़ुव्वते गोयाई ज़बरदस्त है, लोग मानने लगेंगे। किसी बुराई में तर्जुबा कर के देख लो, उस के भी मानने वाले

मिलेंगे। उन का हाल क्या हुवा। उन्होंने, शक नहीं, कि हिन्दुस्तान में आज़ादी की महक हर जगह फैला दी। लोग पैरो बने; नतीजा हो गया। ख़्वाह वक़्त ने किया, ख़्वाह हुक्म था। ग़र्ज़ेकि सेहरा उन्हीं के सिर रहा। क्या **गांधी** में ताक़त थी उस काम के करने की जो **देहली** जा कर तुम ने किया। ख़ैर, आज़ाद हो गये। मगर न मालूम अभी क्या होना बाक़ी है। किसी को ख़बर नहीं जो चीज़ बाक़ी रह गई है; यानी आज़ादी पर न्यौछावर होने वाली वो होगी। नदियाँ बहेंगी। Man slaughter से मतलब नहीं। कुछ elements ग़ायब होंगे। गवर्नमेंट को रुख़ बदलना होगा। तुम लोगों की फिर duties लगेंगी। **पाकिस्तान** सिर उठायेगा। ग़र्ज़ेकि देखो, क्या क्या होता है। अभी ज़मीं ख़ून चाह रही है। रात दिन **पाकिस्तान** में तैयारी हो रही है कि अपनी ताक़त मज़बूत करें और इनाने सल्तनत कुल अपने हाथ में लें। हो गई होती अगर **अरब, फ़ारिस, मैसोपोटेमिया** ताक़तवर सल्तनतें होतीं।

गांधी: मुझ से क्या पूछते हो, मरने के बाद भी सैराबी नहीं हुई। सचाई का principle रहा; सच्चे घर न पहुँचे। लगाव था, लगाव ही में रहा। सच है। अब आज़ादी की भूख है। कहीं **पाकिस्तान** का ख़याल है, कहीं घर का लगाव (यानी **India** का); कहीं **नेहरू** का ख़याल। यह बातें हैं जो साथ लाया। ख़ुशामद करता हूँ कि इस से छुड़ा दो। मैं इस क़दर मसरूफ़ था कि ख़त को समझ लिया कि ऐसे लिखा ही करते हैं। **नेहरू** मुझे तकलीफ़ से छुड़ा नहीं सकते। मैं ने सब को एक ही रस्सी में बांधना चाहा जो क़ानूने क़ुदरत

के ख़िलाफ है। नतीजा यह हुवा। वाक़ई इस की बाग डोर उस को देना चाहिये जो रुहानी रोशनी पाये हुये हो या फिर इतना जंगजू हो कि तेग़ से अपना काम बना ले। तुम्हारी निगाह मेरी तरफ़ क्यों नहीं फिरती। मुझे तुम्हारी हालत का अगर इश्रे-अशीर भी पता हो जाता तो वाक़ई काम से अलेहदा हो चुकता। यह सल्तनत क़ायम नहीं रह सकती अगर आप ने रोक न लिया।

6-2-48 7.30 pm

S.V.: The world is in the state of misery and going down in every way. **Russia** is improving day by day. **America** is swelling double in money. **Britain** is growing poor slowly. With all these things let us see where the destruction begins.

नोटः इस dictate के वक़्त होने वाली चीज़ का नक़्शा सामने आ गया।

S.V.:These are notes for your future guidance. Wait for the work. Let us see the fate of **India** first. **Nehru's** policy which he boasts of is creating poison. **Gandhi** - set, as he is, is not the correct policy. It is neither spiritual nor social. Government cannot pull on with these things. I shall appoint you to correct him. Better if you take the reigns of Government in your hands. They do not know how to manage. Orders have been issued. You will

appoint some sages for the work, according to their capacity. City-wise you can arrange. But remember, 'Sword on one side'. **Nehru's** life to be protected. **Hindu** is a hard morsal to be swallowed by anybody.

8.2.48 8.30 pm

हज़रत क़िब्ला: स्वामी जी महाराज ने तुम्हारे बारे में बहुत से राज़ खोल दिये; मतलब तारीफ़ से नहीं है। वाक़यात में कोई कुछ भी समझे, उस को इख़्तियार है। **अवतार** की हालत का नक़्शा लोगों पर यूं जमा है कि उस के पास बैठने और तवज्जह पाने से पाप मोक्ष हो जाते हैं। **रामावतार, कृष्णावतार** में यह बात ज़रूर थी; जो उन के क़रीब पहुँचा, तर ज़रूर गया, और यह होता रहता है। और हर अवतार के साथ यह बात लगी हुई है, मगर भाई, liberation देना मज़ाक़ नहीं। यह और चीज़ है। क्या कोई इस पर फ़ख्र कर सकता है कि यह बिल्कुल उसी के हाथ में हो। सच तो यह है कि वाक़ई तार देना। क्या कहूँ लफ़्ज़ नहीं बनते। कहो तो कह दूँ, तिफ़लाने मकतब का काम है। आदमी तो वो है जो वाक़ई किसी को liberate कर दे। क्या हुवा चाबी भर कर भेजा गया, उस के ख़त्म होने पर फिर वापसी हुई। चीज़ तो असल liberation है। कह दूँ! कि है कोई मर्दे मैदाँ जो इस को कर सके - है कोई - ? है। जिस के हाथ में क़ुदरत ने इस को दे दिया है। वही हो सकता है मगर एक बात फिर कहूँगा कि क़ानूने क़ुदरत के ख़िलाफ़ भी है कि बिना संस्कार भुगवाये हुये किसी को liberate किया जावे। हुये हैं ऐसे लोग जिन में यह ताक़त हो

सकती थी मगर उन में यह यारा नहीं था कि संस्कारों को ख़त्म कर सकते; लिहाज़ा ख़ामोश ही रहे। क़ुदरत ने वाक़ई इस मद् में तुम को भरपूर किया है। दोनों मल्के दे दिये, मगर मेरी राय यह है कि इस औज़ार को कम इस्तेमाल करना। कौन जानेगा किस में यह क़ुव्वत है। - आह - अफ़सोस। ठीक है। अफ़सोस - क्यों - इस हालत को कोई न जान सकेगा। सीने पर लिये चले जाओगे। कोई ऐसा पैदा हो जाता कि इस राज़ को, जहाँ तक इम्कान था तुम से ले लेता। बनाया, मगर एक ही बन सका। मेरी कुल ज़िन्दगी की मुराद यही थी। ईश्वर ने वो कर के दिखा दी कि मुझ से एक **आदमी नाचीज़** ऐसा पैदा हुवा। भाई, ऐसे शख़्स के लिये यही लफ़्ज़ मौज़ूँ है, और कोई लफ़्ज़ वाक़ई मौज़ूँ नहीं मिलता। सब लोग ऐसे ही बनने की कोशिश करें। मेरी औलाद अगर ऐसी बन जावे। आमीन!

नाचीज़ के लफ़्ज़ पर अक्सर लोग चौंक सकते हैं कि एक महात्मा के लिये जिस के मानी Great Soul हैं, ऐसा लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया। मेरी vocabulary में महात्मा के लिये इस से अच्छा लफ़्ज़ नहीं मिलता। यह ही इस की सिफ़्त है। यह नोट ऐसे confidential हो रहे हैं कि हर शख़्स मज़ाक़ उड़ा सकता है और तारीफ़ समझ सकता है कि इन्होंने ख़ुद लिखाई है। मैं चाहता हूँ कि ऐसे circle में यह बातें रखी जायें जो इस से सबक़ सीखें।

चैतन्य महाप्रभुः मेरी हालत पर लोग बहुत नाज़ करते हैं। मैं ने एक चीज़ ऐसी ले ली थी जिस से लोगों पर मेरे महत्व पर यक़ीन

हो गया था। और कहूँ - सोचो, तुम ने कोई चीज़ नहीं ली। कौन बड़ा है? ज़ात में तैराकी वाक़ई ज़िन्दगी में तुम्हीं ने की। ज़िन्दगी में यह बात किसी को मयस्सर नहीं हुई। ज़ात की हालत बहुत ऋषि मुनियों ने ली; यूँ कहो कि आग की तपिश में बहुत से लोग सिके। आग उन से दूर रही। आंच लगती रही। तुम्हारे गुरु का करिश्मा क़ाबिले तारीफ़ है। कोई शख़्स ऐसा पैदा नहीं हुवा कि ज़िन्दगी में यह हालत पैदा करा सके। इस मद् में तुम दोनों मिसाल हो।

शंका सही है। मगर क्या **कबीर** ने ज़ात में तैराकी हासिल की थी। नहीं। चोला जब छोड़ा उस वक़्त यह हालत नसीब हुई। उन के वाक्यों से पता चल सकता है। उस ने बहुत से ऊँचे stages की बातें बताई हैं। और ऐसे बहुत से महात्मा गुज़र चुके हैं। उन की लड़ी **धुर** तक पहुँच चुकी थी। ऐसे भी हुये हैं जो चोला छोड़ कर ज़ात तक एहकाम लेने के लिये पहुँचे हैं और फिर वापस चोले में आ गये। मगर भाई अज़ ख़ुद यह कभी नहीं हुवा कि चोले में रह कर यह बात हासिल कर सके। परदा अगर चाक कर दिया जावे तो तुम में भी यह मल्का हो सकता है। मगर क्या कहूँ कि उम्मीद हो सकती है कि तुम फिर वहां से वापस हो। बहुत सी बातें मजबूरन् रखना पड़ीं। इस लिये कि क़ुदरत की मन्शा ज़िन्दगी तुम्हारी क़ायम रखने की है।

S.V. : Can you expect such person to come down again?

चैतन्य महाप्रभुः (continued): मगर भाई कह दूँ। एक

नुक़्स है वो यह कि तुम्हारे वतीरे ने तुम को क़तअन् छुपा लिया।

नोटः (ब-सवाल वतीरा क्या है।)

S.V.: Childish habits, not knowing at all, what you are. The thing is due to the fact also.

हज़रत क़िब्लाः भाई, यह बातें ऐसे शख़्स में पैदा हो सकती हैं जिस में सिवाय एक चीज़ के तमन्ना न रही हो। हर कोशिश उसी तरफ़ हो गई हो।

सवाल का ज़वाब यह है कि अगर तुम ऐसा कर भी बैठो यानी संस्कारों का मिटाना, तो तुम पर कोई ऐब क़ायम किया नहीं जा सकता। यह तुम्हारे Power में है। मगर मेरी राय वही है जो मैं ने ऊपर लिखाई है कि ताक़त होते हुये न करना। अगर हुक्म हो तो कभी न चूकना। कोई मर्दे मैदां ऐसा मिल जाता जो यह चीज़ें जहाँ तक कि हो सकता, ले लेता।

S.V.: My Lord has meant that everybody should try to reach the sun if he wants to reach the moon. Leave your shilly-shally habits. Follow your Master in this respect. Pain is of course a drawback, but it is not as much responsible as you are yourself. I fear lest somebody else may follow it. The general capacity of the human being is that he enters into something not required. Dedicate it to some Master or otherwise to anybody who may be in his

place. Set a good example for others to follow. There are many persons in the world better off than yourself in this respect.

This is the first Rishi of his time of which you have talked in the **Efficacy of Raj Yoga**. He is swimming. He himself came to see you. Great Rishi, he is no doubt. We all respect him.

10.2.48 (7.45.pm)

S.V.: I guarantee nobody knows the plot working and which took the life of **Gandhiji**. Mr. **Churchill** is at the head and he is working day and night just as he worked in **War (Second World War).** He is patriot to his nation. He knows the hungry stones in his country. He is one of the greatest politicians and knows fully (well) that a part of the population of **England** will starve if **India** is gone from its clutches. I want such a patriot in this country. Is there anybody now? I do not think so like him. They (Indians) do not know how to rule as they have been slaves from time immemorial; so to say, or a thousand years. Nobody could remove the slavery from the brains of the Indian people. There is one, **Nehru** of course, who dies for **India. Pantha (Pant)** is a glutton. But there is a mystery behind it. A great defect they are having now, that they have become arrogant of their power. Mr. **Nehru** is an exception. **Fifth Columnists** are working in **India** to

dissipate **Hindus** and this is the scheme of Mr. **Churchill. Gandhiji's** murder is due to him. There is a society in **Sangha** (Rashtriya Swayam Sewak Sangh, RSS in short) of course very limited, and they are all fifth columnists. **Sangh** people do not know it. They are the members of the society and carry out the drill. How folly it is on the part of this big Society that they have not created a block of CID in their own work and department. They will go away when their plot is complete. The **murderer** of **Gandhiji** even himself does not know. Government's part is not towards that, and nobody could yet make out who is at its bottom. Only **Churchill's** brain works and he has no friend in this respect. His scheme is in his brain and this is an actual politics they should learn from me. I was one of the greatest politicians during my lifetime but I did not touch this subject because my goal was something else. Is there anyone ready to learn politics (from me)? He can do so from me. Mr. **Subhash Chandra Bose** is no more here. He was the father of politicians. His character was untouched. He gave birth to the present situation which you call "Independence," and nobody knows his name. **Gandhiji** is said to be responsible for all these things. But the poor fellow is neglected. Who was at the head of each such thing? The fellow before you (i.e. RC) as I have talked somewhere. Look here, **Ram Chandra**, you are not only a sage but you will have to enter into politics also, and that you will do by your will force. You will rule India and the

world and for the Brighter World, your Guru has talked already somewhere. Look here, boys! such personality will not come, I say it again. India has not yet seen a man like him. His habits, of course, are shilly-shally of which I am shocked and that may be due to his bodily infirmity. Nobody can put him into the cage. He will be free to work even in the prison. He can bring about the down fall of any government at any moment. This power, nobody knows. The poor fellow with his cot, that is the vision in general. What he can do in a minute, others will require a thousand years. He can change the world very soon, of course the result, you will see after sometime. He is the only personality who will bring the change and nobody else. The present policy of government is going against it. They are creating poison and are axes at their own feet. You will change the policy. Let time come. **Nehru** wll be no more the **Nehru** as he is at the present day. He is doing all, in the heat (of sorrow) caused by the death of **Gandhiji** and this is against the principle of the government. **Jinnah** (Mohammad Ali Jinnah, Qaide-Azam of Pakistan), of course, knows how to rule, but he is unwisely directed by his friend Mr. **Churchill.** He is really a fit man for government business. Constitutional laws he knows better than anyone else in India. I remember **Bose (Subhash Chandra Bose)** again and his unblemished character. Such personality is again required for India. I will order you

for his liberation and you will remain in communication with him in matters of politics. Such a personality was never born in India, having regard to the present day politics. **Gandhiji** was a child to him in this respect. I cannot call him a spiritual man. His tactics were **Bania** tactics and the Government cannot go on in this way. This policy is not required for the Government; whoever follows his example, will throw his nation in the dark. Had his policy been liked by us, I would have at once ordered you for his liberation with the special features and powers you have got from Nature. In my opinion such a personality, had he not been the deliverer of India, would have been thrown in the **hell** - rather gloomy one. He has made his nation timid and the same school is going to be opened which you will destroy. You will poison the mentality of the students who will come for such a kind of teaching. I would have ordered you for his (**Gandhiji's**) destruction by your will-force, had he not been called off. Government can do nothing even if you challenge these things in the open combat. I shall collapse the government and the world itself if anybody comes with chains for you. You need not fear at all for this and do what you are told. It is not an easy matter to put such a personality (as you are) into the cage. I will destroy the very bars if you are gone in it (incarcerated). **Gandhiji** had the public force and you have got the godly force of your own world which you are

master of. If you throw the power into the world, the world itself will collapse, what to say of a tiny government; and this duty will be mine. Nations are not built as has been proposed by the Government. **Hindu Society** has fallen down on account of **Ahimsa**. They do not know what **Ahimsa** is and **Pandits** are responsible for that. They are fit candidates for the hell. They have wrongly interpreted this idea in the **dark period** (of Indian history). **The causes of the down fall of the Hindu Society** are two. The first cause I have just dictated i.e. **Ahimsa**. The other cause **Chaukaism** (dining room or kitchen based religion). I had been somewhere during my lifetime and this thing was highly criticised. Really their faith or **Dharma** lies on that very thing. If anybody touches your food then you are gone forever from the society. So many **Muslims** are the result. Hindu Society cannot be raised unless these two things are absolutely taken from them. They will loot an orphan and misappropriate his property but they cannot kill an ant. Hardly a few understand this philosophy although discussions are current in this respect. Such persons have really carried their nation into the dark. They have really created a gloomy block. So many warriors have been killed in **Mahabharat** (the Great War fought between Kauravas and Pandavas). Is **Arjun** responsible for this thing? Did **Lord Krishna** ever preach the religion of the type current

among the Hindus? Was he **(Arjun)** sent to hell? No. He is one of the liberated souls. The present teaching of the **Hindu Religion** is against **Gita** and **Gandhiji** was not a religious man. The people bow down before him calling him a great Lord. He was lord in one respect that apparently he was the deliverer of India. I criticise **Gandhiji** as a religious man and a politician. Boys, you should never follow **Gandhiji** and teach them, who come after you, the same thing telling them, that is the standing order of the liberated souls. I leave this note for your coming generation. They should never think **Gandhiji** as a religious man. As a politician they can form any opinion about him. That is another matter. **Hari**! I strictly tell you not to follow him in any respect but to your own Master - strictly. I tell the same thing to **Naren** and **Putti Babu** and everybody. Things like these should be thrown to dogs. These things should not be followed by any (anyone) of you or by **Hindu nation.** During **past days (ancient time) Banias** (Business community) were kept only for the wealth of the country to increase. During war their duty was to devote (their wealth) for its successful operation. That was their only duty. **Bania** will always go to solidity. But do not think **Gandhiji** in that exceptional case. **Social laws** were crushed by him. **Bhangi colony** (the colony of scavengers in New Delhi) was in his vision. Is it the

equality? The equality is that everybody should have his own share and that is the law of **Hindu Society** - the basic principle of the system formed at first. He should have improved their lot and everybody in the Society has the same kind of duty and he should love them but should never forget the principles already laid down by **Lord Krishna** in the **Gita**. Do you know what that version is? I think **Lord Krishna** will tell Himself or if you like I can translate what He says.

श्री कृष्ण जी महाराजः मेरा उसूल (principle) यह था कि सोसायटी के हर मेम्बर को उस का हक़ देते हुये अपना समझो।

S.V.: Ishwar is **Samvarti and Samdarshi.** But do you know or anybody can understand this thing. Your Guru has explained these things somewhere in the notes. I repeat the same thing or you write the same here. He (Ishwar) looks (upon) His creation equally but treats them according to their own doings. This thing contains His **Samdarshism** and **Samvartism.** That is the law to be followed by the Society of the Hindus.

20-3-48 (9.40 pm)

हज़रत क़िब्ला : दुनिया की हालत बिगड़ती जा रही है। मुझे इतना काम करना पड़ा है कि शायद कभी न किया हो। इतनी

ग़ैरहाज़री रही है कि पेश्तर न रही होगी। आसार नुमायाँ हो चले बरबादी के, गो आहिस्ता-आहिस्ता। **रूस** (Soviet Russia) अपने दम ख़म तेज़ किये बैठा है। **अमरीका** दौलत के ज़ोऽम में चूर है। छोटी सल्तनतों के लिये ज़वाल है। और schemes भी बन रही हैं। गड़बड़ है। **Britain** पछता रहा है।

S.V.: You are getting dictates for politics. It is a part and pacel of your life-programme. You are in touch with the politics. **America** will see **Russia** first.

31-3-48

हज़रत क़िब्ला: मैं ख़ुश हूँ कि ईश्वर सहाय की हालत अच्छी है, मगर दिल्ली अभी दूर है। कुछ रुकावट, ढील ढाल कह लो, है। वो जब यह (रामचन्द्र) चाहेगा, दूर कर देगा। मेरा भेद ज़िन्दगी भर किसी ने न पाया। सिवाय इस के कि भले और सज्जन आदमी हैं। अभ्यासियों को, गो वो लोग मुझ से मुहब्बत करते थे, मेरा ठीक पता न मिला । यहाँ भी वही हाल पाता हूँ। सच है दुनियाँ तत्त (तत्त्व) को नहीं देखती। आँखें ही नहीं। मेरी दुआ हमेशा तुम्हारे साथ है। सन्स्था बढ़ेगी। अच्छा तब होता जब भरपूर अपनी ज़िन्दगी में ही देख लेते। ढील ढाल लोगों की कुछ अजीब तरीक़े में हो रही है। जिस शख़्स के जो काम सुपुर्द किया जाता है, यहाँ से जाने के बाद ख़बर नहीं रहती। न मालूम मैं क्या-क्या लिखवाना चाहता हूँ, मगर लोग हिम्मत अफ़ज़ाई

नहीं करते। क्या ख़तूत जो तुम ने लिखाये हैं, मामूली हैं? तुम्हारे ऊपर बड़ा बार है, मेरा और घर का। क्या मुमकिन नहीं है कि मास्टर साहब को इस काम के लिये, यानी किताबें छपाने और इस के इन्तज़ाम के लिये छोड़ दिया जावे? **हरी** भी साथ दें। छुट्टी आ रही है। अंग्रेज़ी किताब का मुझे ख़याल आता है। चीज़ें बासी होने पर छपीं तो क्या। ऐसी काहिली में ने कहीं नहीं देखी।

2-4-48 (8.00 pm)

हज़रत क़िब्लाः क्या खूब सवाल है, भगती और ज्ञान का। अगर कोई शख़्स समन्दर में जाये मोती निकालने के लिये, ऐसा साब्क़ा आ पड़े कि जिस सीपी को देखे घोंघा पावे, हालांकि उसी में से मोती बरामद होता है। उस की क्या हालत होगी। कितनी नाउम्मीदी होगी, मुमकिन है कि वो इस अमल को छोड़ दे और मोती उस को कभी नसीब ना हो। **ज्ञान** ख़ुलूस है। भरी हुई चीज़ की रग़बत भरी हुई चीज़ से होती है और ख़ुलूस की ख़ुलूस से। जब ख़िला होता है हवा को फैलने को जगह मिलती है। शुरू से ही अगर किसी को ख़ुश्क चीज़ पर डाल दिया जावे जहाँ कि ख़ाली ही ख़ाली है, वहाँ वो चीज़ ज़रूर है जिस से मोती बनता है, तो उसकी रग़बत कहाँ तक रहेगी। **ज्ञान** वो चीज़ है जिस के बढ़ाव और सिमटाव से मोती बनता है या यूँ कहिये कि मोती को असल हालत पर ले जाने से वो चीज़ बनती है जो इस की अस्ल है। **भगती** को जो ख़ुद ब ख़ुद होती है, अस्ल हालत पर ले आने से **ज्ञान** हो जाता है, और भाई, और कहूँ। **ज्ञान** को असली

हालत पर ले आने से वो चीज़ रह जाती है जिस की तलाश है। मतलब यह है, वाक़ई तौर पर असली हालत को देखते हुये और मुक़ाबिला करते हुये ज्ञान ओर भगती असल नहीं हो सकतीं। वो चीज़ उस से भी परे है। मगर **भगती** से चल कर **ज्ञान** मिलता है और **ज्ञान** को असल हालत पर आ जाने से वो मिलता है जो असल ही असल है। हम अगर **ज्ञान** को पहले ले लेते हैं तो **भगती** से दूर हो जाते हैं। अगर हम **भगती** लेते हैं तो **ज्ञान** से दूर नहीं होते। दोनों अमर बन्दे के लिये लाज़मी हैं मगर इस तरह कि बन्दा भगती लेता है और ज्ञान उसे अता होता है, आख़िर में। गोया भगती को लेना बन्दगी की दलील है। ज्ञान अता होना ईश्वरताई की दलील है। एक चीज़ हम ने ली, दूसरी चीज़ की बख़शिश ख़ुद ब ख़ुद हो गई। जब हम उस में पहुँच गये तो उस के क़रीबतर हो गये जिस की यह चीज़ निचोड़ है। और बढ़े, असल ही असल रह गई। मेरी राय यही है कि भगती लेना चाहिये। हर्ज ज्ञान लेने में भी कुछ नहीं है। मगर भाई, यह रास्ता लंगड़ी हो जाता है।

3-4-48

नोटः आज **नेहरू** की ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त के लिये साढ़े सात बजे शाम के बाद फिर ख़याल अज़ख़ुद रुजूअ हो गया।

4-4-48

हज़रत क़िब्लाः मैं चाहता हूँ कि हर शख़्स को आला से

आला तालीम दूँ मगर लोगों का दुनियावी चक्कर नहीं छूटता। यह ज़रूर है कि इस से निकालने वाला मैं हूँ, मगर अभ्यासी की तवज्जह इस तरफ़ (ईश्वर) घूम तो जावे। अगर छोड़ नहीं सकता तो कम अज़ कम इस से मुँह मोड़ने की ही तबीयत चाहे। कुछ तो करे। कितनी आसान बात है। मुश्किलात से निगाह हटा ले और अपनी डोरी इस तरफ़ जोड़ दे। इस से आसान सिलसिला नहीं मिलेगा। यहाँ पर गुरु पर दारोमदार है। चेला आज़ाद। फ़क़त एत्क़ाद की कमी न रखे और उस से लौ लगाये रहे। हर काम में उस को शरीक समझे और समझ ले कि मैं उस की तामीले हुक्म कर रहा हूँ। अपने आप को सिर्फ़ उस पर छोड़ने की कोशिश करे। जब लोगों को रुपये की ज़रूरत होती है तो मालदार आदमी से दोस्ती की कोशिश करते हैं। उस को ख़ुश रखने के लिये सब कुछ कोशिश अमल में लाई जाती है और जब ख़ुश हो गया तो उस की इन्तहाई ख़िदमत करने के लिये लोग तैयार रहते हैं कि कभी ऐसा हो जावे कि मुझ से रब्त-ज़ब्त इस क़दर बढ़ जावे कि हर ज़रूरी बात पूरी होती रहे। कहिये इस मतलब से किस क़दर जाँफ़िशनी से काम लेते हैं। ईश्वरी मद् में भी अगर कोई ऐसा ही करे और उस को ख़ुश कर ले तो क्या यह हो सकता है कि वो रहमत नाज़िल न हो जावे जो मालदार के पास नहीं है।

7-4-48 (8.15 am)

हज़रत क़िब्लाः मैं वादा करता हूँ कि अगर कोई शख़्स इस इल्म को जुनूबी हिन्द में फैला सके तो उसे liberate कर दूँगा।

Egypt लेना पड़ेगा। यह बड़ी पुरानी जगह है, इस को उभरना चाहिये। तुम्हारी तन्दरुस्ती से बहुत मजबूरी है।

13-4-48 (बमक़ाम लखीमपुर)

औरतों के लिये अभ्यास का तरीक़ा: हर अभ्यासी औरत ख़्वाह शादी शुदा ख़्वाह कंवारी या बेवा। दिल के मक़ाम पर यह तसव्वुर बांधे कि मैं उस का ध्यान कर रही हूँ जो सब में रमा हुवा है।

हज़रत क़िब्ला: मैं ने इस से बेहतर तरीक़ा देखा ही नहीं। यह वाक़ई औरतों के लिये निहायत मुफ़ीद है।

S.V.: Look here! You are making change everywhere. Have you realised your capacity. Gurudom is changed; method is changed. You have really overhauled the System. The method is common to all the ladies, married or unmarried. The ladies will develop **Pati-vrata Dharma** in this way.

18.4.48 (9.30 pm)

श्रीमति मीराबाई: तुम्हारे इस ख़याल ने कि मैं मौजूद होती तो सब कुछ देने के लिये तैयार हो जाते, मुझ में तहरीक पैदा कर दी। यह ज़रूर है कि मैं अपने मक़सद को पहुँच गई और कृष्णमय हो गई। मगर इस से ज़्यादा नहीं हो सकी। लोग इस को सुन कर ताऽजुब

करेंगे कि मैं क्या बात कह रही हूँ। मेरी दौड़ भगती तक थी और नतीजा वही हुवा जो उस का अन्जाम है। मैं ने अपने आप को भुला दिया था इस लिये मैं '**है**' तक पहुँची। आपने यह दोनों चीज़ें भुला दीं। समझ लीजिये कि आप की पहुँच कहाँ तक है। लोग इस हालत को यहाँ देखने को तरसते हैं। मैं **महात्मा रामचन्द्र जी** फ़तहगढ़ के बारे में क्या कहूँ कि ऐसी हस्ती बना दी। उन का दरजा वहम व गुमाँ से बाहर है। आप की इस तहरीक से जो दिल में उठी मैं ने बहुत कुछ पालिया। इस को **ईसार नफ़्सी** कहते हैं। उदार चित्त भी कह सकते हैं। और यह उदारता ऐसे फ़क़ीरों में पाई जाती है। लोग तुम को देख कर तुम्हारे बाद याद करेंगे। एक बात मैं कहती हूँ, सुनो। अगर तुम मौजूदा आवरण उतार दो तो फ़ायदा लोगों को ज़्यादा होगा, यानी उस चीज़ को पेश कर दो जो सादगी में छुपी हुई है। वो चीज़ जो असल है, सादगी के परदे में छुपी हुई है। गोया सादगी इस का ग़िलाफ़ है। तुम्हारे गुरु महाराज ने इस वर्क़ को बहुत कुछ उतार दिया था। यह मिसाल लोः-

चोबे जी, जिन को आप ख़त लिख रहे हैं, इतने झझड़े हुये तबीयत के अदमी हैं कि अब तक उन्होंने अपना कहीं ठिकाना नहीं बनाया।

S.V.: He is a peculiar kind of your disciple. Faith is wanting.

मीराबाईः उन के दिमाग़ नहीं जो इन मज़मूनों को समझ सकें। यह ठुमरी, टप्पा नहीं है जो आसानी से समझ में आ सके। इस के

समझने के लिये अक़्ल चाहिये। यह मज़मून ख़्वाह गहरे ख़्वाह उथले, जो लिखे जारहे हैं, मामूली निगाह का काम नहीं कि समझ सके। सही अन्दाज़ा मैं तुम को देती हूँ कि तुम्हारे गुरु महाराज ने इल्म भी, जो उन को आता था, रूहानियत के साथ ही साथ तुम को बख़्शा है। और यह सब उन के ख़यालात हैं जो बड़ी वाक़फ़ियत रूहानी और इल्म में हासिल कर के मौहय्या किये थे। यह बातें हमेशा सत् गुरु में पाई जाती हैं और वो वक़्त के सत् गुरु थे। उसी में यह ताक़त होती है कि जैसा चाहे जिसे बना लेवे। और जो चाहे वो दे डाले। इस का नमूना कहीं और नहीं मिलेगा। मैं उन को सराहती हूँ। अगर एक भी हस्ती तुम ने ऐसी बना ली जैसी उन्होंने बनाई है तो तुम **गुरु ऋण** से उद्धार हो गये। और अगर कहीं तुम ने उस इल्म को फैला दिया तो बुज़ुर्गों के ऋण से उद्धार हो गये। सब की निगाहें आप पर हो रही हैं और क़ुदरते-कामिला तुम में हो कर काम कर रही है। बहुत से बुज़ुर्ग अपने आप को छोड़ कर तुम में समा चुके हैं। यह ज़माने की बलिहारी है कि यह चीज़ें तुम्हारे ही हिस्से में आँई। ज़रूरत इस अमर की थी कि कोई रूह ऐसी होना चाहिये कि तबादला कर सके, चुनाँचे जो बडी चीज़ आप के हिस्से में आई है वो Destruction है मगर साथ-साथ Construction की पूंछ भी लगी हुई है। इधर destruction उधर construction तुम अपना अन्दाज़ा अभी तक नहीं कर सके। एक बन्द हायल कर दिया गया हे ताकि ज़रूरत से ज़्यादा इन में से किसी काम को न कर जाओ। यह टूटेगा, जब ज़रूरत इस की होगी। बहुत सी ताक़तें जो तुम को मिली हैं अब तक

इस्तेमाल नहीं कर सके। ज़ख़ीरा इकट्ठा कर लिया है, और यह **महाप्रलय** के वक़्त काम देंगी। बरसें रियज़तें करते लोगों को गुज़र गई और तुम यह चीज़ें मुफ़्त ही में मार ले गये।

S.V.: It was bought from (with) blood. You are bestowed with both the qualities. **Love** on one side, **sacrifice** on the other. Both have gone side by side to achieve this end. **Meera** bought from (with) love, no doubt and you bought at life's cost. One thing alone cannot achieve this end. Soaring with both wings is necessary to achieve this object. I tell you boys! for the same **Meera** liberated herself. But she cannot liberate others. This is the special feature in you that you can liberate a sinful person at a glance. People will wonder. **Lord Krishna** had only this power. You are specially gifted with it.

Bought from (with) blood is never lost. None who had command over the **Central Power** and that you have done so often.

29.5.48

हज़रत क़िब्लाः कोई इन्सान तकलीफ़ से बरी नहीं। कम व बेश सब को होती हैं। यह ख़ास्सा है। बन्दा इस से बरी नहीं। अलबत्ता बरगुज़ीदा लोगों का दिल ठहराव पर रहता है और यही

पहचान ख़ास और आम आदमियों की है। तकलीफ़ें उठा लो। एक नुक़्सान ज़रूर है। फ़क़ीर के दिल की तकलीफ़ बग़ैर असर किये हुये नहीं रहती। लोगों के अकसर झंझटों से पाक होने की ग़रज़ से जंगलों की राह ली है। हमारे यहाँ यही रियज़तें हैं। घर में बैठें और बरदाश्त करें। तुम्हारे दिल का ख़रीदार वाक़ई तौर पर तुम्हारे घर में कोई न था। तुम को जिस ने देखा, ग़ैरियत से ही देखा। यह घर का हाल है। सब बेअनाँ हो रहे हैं। अफ़सोस तो यह है कि जिस गोद में तुम ने परवरिश पाई वो तुम को अब तक न समझ सकी। ऐसी औलाद बड़े भाग्य से मिलती है जिस के हाथ में दुनिया और उक़्बा हो। यह तकलीफ़ जो है सब को रही है। कोई बुज़ुर्ग इस से पाक नहीं।

श्री कृष्ण जी महाराजः मेरी ताक़त और हिम्मत नायाब थी। राजा था दुनिया का, और क़ाबू था दिल पर। तलवार मेरे हाथ में थी और चक्र भी। तुम्हारे हाथ में फ़क़त तलवार नहीं, चक्र ज़रूर है, और यह ख़ास हालत में काम लेने के लिये दिया गया है। बहुत सी उलझनें दुनिया में पड़ी हुई हैं। सुलझाना तुम्हीं को होंगी, इसलिये ठहराव की तुम्हारे यहाँ ज़रूरत है।

8-6-48

S.V.: On the death of **B. Madan Mohan Lal of Badaun,** you have been hooted in a way. We are all sorry for his death. You do not always come in the naked form. You beat drums like worldly people sometimes. Grave

(solemn or sober) you ought to be as you were during your childhood. Do not say much unless you are told. It is sad that your **Bhai Saheb** is looking to you by diving deep into the **stagnant** pool. I remember perfectly while our Master dictating for **B. Madan Mohan Lal** as his (B. Madan Mohan Lal of SPN) representative, there was a sentence something like - "If life remains", but it was neglected in the writing. This is of course, not your defence. You are responsible for the mistake. You know your Master does what you say or He does what you think better. That is why (of course, B. Madan Mohan Lal of Badaun had the capacity) such a letter was drafted. He (मदन मोहन लाल, शाहजहाँपुर) was under heels during that time making use of your simplicity. Very many things you did to please him. That is why mistakes resulted. Blunder- Blunder.

9-6-48

महात्मा बुद्ध भगवानः मेरा यह कहना कि मैं उस से हटा ही नहीं, सही है। लोगों को मुग़ाल्ता हुवा है। जिस बन्धन में कि वो मौजूद थे मैंने उन को उस से भी आज़ाद रखना चाहा। और यह बड़ी ऊँची फ़िलास्फ़ी है। बन्धन का कहीं ज़िक्र ही मेरे दौर में न था। अगर ईश्वरी बन्धन भी शामिल है, आवागवन से रहित नहीं हो सकता। जिस बात पर कि हम को आख़िर में आना है, शुरु से ही ले ली गई थी। वो science जिस के ज़रिये से या जिस को follow करने से निर्वाणपद को प्राप्त होते हैं उसी पर चलने के लिये हम ने रास्ता

क़ायम कर लिया था। ज़रूरत नहीं कि अगर हम को असली हालत पर पहुँचना है तो हम उसी को भजने लगें जिस की वजह से यह सब कुछ है। फिर उस के भजने से हम को प्राप्त क्या चीज़ होगी। जो उस के बाद है। अब हम अगर अपने आप को उस तरफ़ से हटा लेते हैं और यह क़ायम कर लेते हैं कि उसी ज़रिये से हम को उस जगह पर पहुँचना है जिस को निर्वाण कहते हैं तो निहायत अच्छा है। हम ने unlimited चीज़ को हासिल करने के लिये unlimited ज़राय इख़्तियार किये और अपने आप को उस बन्दिश से भी बचा लिया जहाँ पर कि हमारा अटकाव हो जाता है और उस की ज़रूरत भी नहीं कि हम आख़िर में एक बन्द और पैदा कर लें कि जिस का तोड़ना भी लाज़मी है। दावे के साथ कहता हूँ कि कोई शख़्स इस आख़िर बन्धन से अपने आप को नजात कर के देखे कि निर्वाण कितनी आसानी से प्राप्त होता है। मैं ने बिल्कुल असलियत ही असलियत ली थी और वो बातें क़ायम कर दी थीं जो सरल और सुगम हैं जैसा कि हम को बनना है। अगर हम ईश्वर नाम की रटना नहीं करते और उस हालत में जिस को ईश्वरी हालत कहते हैं, चले जाते हैं तो बताईये कि क्या हर्ज वाक़ाऽ होता है। लोगों ने इस को मज़हब ग़लत क़रार दिया है। यह बिल्कुल science है। इस के द्वारा हमारा formation हुवा है और उसी के द्वारा हम अपने आप को छिन्नभिन्न करेंगे।

बसवाल जगन बाबू: तरीक़ा यह है और यह बड़ी ऊँची बात

है अगर हम असली तैराकी पर आ जावें और जो चीज़ें कि मौजूद हैं उस तरफ़ अपना लगाव क़तई न रखें तो एक तरह से हम शुरू से ही आज़ाद होने लगते हैं। दहरियों (Atheists) का यह हाल है कि वो इस चीज़ में घुसते नहीं हैं बल्कि ज़बानी जमा ख़र्च से इस को साबित करने लगते हैं। अगर हम पानी की existence को ख़याल में न आने दें और इस से काम लेते रहें तो इस के मानी यह होंगे कि जहाँ से कि पानी की बुनियाद है, हम उस से in touch हैं। अगर हम soul की existence को न मानें मगर उस का जो अहाता है, उस में अपनी तैराकी क़ायम रखें तो क्या फ़र्क़ हो जाता है। इस में अच्छा यह होता है कि हम unlimited चीज़ जिस की वजह से soul वगैराः हैं, सम्बन्ध क़ायम कर लेते हैं। क्या **मुहम्मद साहब** (सल्लo) की बात का एयादा कराने की इस वक़्त ज़रूरत नहीं है कि उन्होंने दोज़ख़ की आग लोगों को डराने धमकाने के लिये मश्हूर कर दी थी। इसलिये कि वो लोग गरमी से परेशान रहते थे। उस से ज़्यादा गरमी का ख़याल उन के दिल में डालना गोया उन को ऐसे कामों से मना करना था कि जो नहीं करना चाहिये। उन्होंने एक बात पैदा कर दी थी ताकि लोग डरें। मैं ने एक बात निकाल दी इसलिये कि तैराकी में कोई रुकावट इस क़िस्म की पैदा न हो कि हम को अभी उसे पार करना है। अगर आप पाबन्दी करते हैं और रास्ते पर चलते हैं तो इस के मानी यही हो जाते हैं कि हम उस चीज़ पर चल रहे हैं जिस से नजात मिल सकती है। अच्छा मान लो, जब तुम न थे तब जो कुछ भी था उस का नाम क्या था; उस को कौन बता सकता है। और क्या आप कह सकते हैं कि इस वक़्त उस का नाम क्या होगा। अगर हम अब

भी यही समझ लें तो क्या वही मतलब नहीं आ जाते हैं। Unlimited चीज़ के नाम क़ायम करने से गोया उस को limited कर देना है। हम Unlimited में जा रहे हैं जिस का नाम कुछ नहीं है। Unlimited, Unlimited-Infinite.

अब इस को चाहे ईश्वर कह लो। मगर इस के कहने से ख़याल में रुकावट ज़रूर पैदा होती है। एक दरिया को हम पार करते हैं। उस का अगर किनारा दिखाई देता है तो हम समझ लेते हैं कि हम को इतने गज़ या इतने मील तैर कर जाना है, और हम अपने ख़याल में, ऐसी हालत में एक तरह का limitation ज़रूर पैदा कर लेते हैं। अब किनारे को अगर हम ईश्वर कह लें तो हमारी नुक़्ताए नज़र सिर्फ़ वहीं तक पहुँचेगी। अब ऐसा दरिया है जिस का किनारा नहीं तो फ़रमाईये कि आप swim ही करते रहेंगे और उसी चीज़ में swim करेंगे जिस पर swim करने से पहले शख़्स ने किनारे पर निगाह करली है। फ़रमाईये कौन अच्छा है और कौन बन्धन से नजात पा रहा है।

S.V.: We are swimming in the **Utter (Ultimate)**. Everyone of you must swim in the same **Utter** (Ultimate). The philosophy of **Mahatma Buddha** is quite clear. Really speaking we say, "God", What for? Because we see His display. He is the cause of all these things and will remain so in future. As the method teaches us or as the etiquette allows us or as the time permits us, we take the easy step and the step is gone or finished in the end and you come

to the higher philosophy of **Mahatma Buddha** in the end. There is no difference at all. **Mahatma Buddha** was a godly man in pure form. You take the medium of Guru and that **Mahatma Buddha** does not deny. This solves everything.

महात्मा बुद्धः मैं ने meditation कर के यह बातें जान ली थीं। तकलीफ़ से नजात हासिल करने के लिये मैं ने यह सब रियज़तें की थीं।

15-6-48

हज़रत क़िब्लाः मेरा जी criticism से पक गया है। आलिमे-बेअमल की कहीं इज़्ज़त नहीं होती। बाबू **मदन मोहन लाल** के criticism का जवाब मैं देता हूँ। अपनी इन्तिहाई नीची हालत पर आ जावें, और यह हालत है जहाँ यह बात पैदा ही नहीं होती। इस को explain करना मुश्किल है। यह एक ऐसी चीज़ है जो हर शख़्स के हिस्से में नहीं आती। ख़ास personality जो हो इस में वही मुकम्मिल होता है। इस में भरपूर मैं ने किसी को नहीं देखा। कुछ न कुछ कम ही पाई। अगर ऐसा हो गया तो कुछ करना बाकी नहीं रह जाता। और वो अहल उन ताक़तों का होता है जो कि liberation के लिये ज़रूरी असबाब हैं। ख़ैर यह बातें दूर हैं। यह तो ईश्वर पर है कि वो जिस को चाहे यह अतिया बख़्श दे। हमारा फ़ेल यह ज़रूर होना चाहिये कि हम इस हालत तक पहुँचने की कोशिश करें। जहां तक कामयाब हो सकें, अच्छा है। इस के लिये नुसख़े बहुत हैं। मगर

मुजर्रब वही है जो तुम ने इन्हें बताया था यानी एक दूसरे को submit या yield करना। लोग इस के करने की आदत डालें और घर ही से इस की शुरुआत करें। जज़्बा दिल में रहे और हर काम करते रहें। देखें मुहब्बत कैसे पैदा नहीं होती। हर शख़्स को यही तल्क़ीन की जावे। यह एहसास सही है कि क़ुदरत masterly हैसियत रखते हुये अपने आप को submit किये हुये है। अगर उस में ज़ोर होता तो लोगों को इस क़दर ताक़त न थी कि इस से गुज़र कर उस तक पहुँचते, जहाँ पहुँचना चाहिये।

21-6-48 (8.00 am)

(पूरनपुर ज़िला पीलीभीत)

S.V.: You should keep a watchful eye on Hyderabad affairs - watch only the situation and activities.

(बसवाल ईश्वर सहाय कि "माया से काम कैसे लिया जावे")

हज़रत क़िब्ला: पहले हमें यह समझना चाहिये कि **माया** क्या है। माया उस आँख से देखी जा सकती है जिसने उस को (ज़ात को) देख लिया हो। अगर हम **ज़ात** को पहचान लें तो **माया** का समझना फिर कुछ नहीं रह जाता। या अगर हम ज़ात से सम्बन्ध जोड़ लें तो भी **माया** एक अलेहदा सी चीज़ नज़र आने लगती है। उस के बाद वाली हालत (यानी ज़ात के बाद वाली) वाक़ई माया है। इसी ताने बाने

में हमारी परवरिश हुई है और इसी से हो कर हम गुज़रेंगे। अगर हम अपना सिमटाव कुल्ली हक़ीक़त में कर लेते हैं तो गोया हम उस हालत में पहुँच जाते हैं और वो जम जाती है कि यह चीज़ एहसास में नहीं आती। अब यह चीज़ हमारे एहसास में नहीं आ रही है क्योंकि हमारी नज़र अब इस पर जम चुकी है। चीज़ का एहसास में न आना यह मानी रखता है कि गोया हम उस हालत के ऊपर हैं। अब हमें सिवाये उस हालत के जिस पर कि हम हैं, कोई और हालत दिखाई नहीं देती। अब गोया उस परदे पर हमारा command है। command करने वाली ताक़त हम में उस जगह काफ़ी मक़ाम करने की वजह से काफ़ी बढ़ गई है। ज़ात के भन्नाटे का नतीजा **माया** का आग़ाज़ है जिस ने तरह-तरह के चमत्कार अपने दिखा दिये। Commander कौन था। वो चीज़ जिस की वजह से ज़हूर में आई। आप को अब क़ुर्बत उसी चीज़ से हो गई है जिस को Commander कहा है। उस के vibrations ले लेकर आप अन्दाज़ा कर रहे हैं कि यह चीज़ हम से है। अब आप उस पर command कर रहे हैं। हर ताना बाना जो फ़ैला हुवा है उस में आप के मद्दोजज़र ख़ुद काम कर रहे हैं। गोया आप में जैसे vibrations पैदा हो रहे हैं वैसा ही ज़ोर आप माया के हल्क़ों में दे रहे हैं। दूसरे मायनों में आप उस से काम ले रहे हैं।

22-6-48

क़रीब 4 बजे शाम के वक़्त, अन्दाज़ यह हुवा कि कोई साहब मुझ से (रामचन्द्र) बात.कर रहे हैं। कहा यह कि "आप ने अपने

आमद की इत्तला नहीं दी ताकि मैं कुछ महमान-नवाज़ी करता।" जवाब दे दिया कि "यह बात ज़रूरी नहीं थी और न मैं इत्तला देने के लिये मजबूर था। मगर जब आप को मालूम हो गया कि मैं **पूरनपूर** मुक़ीम हूँ तो आप अब महमान-नवाज़ी शुरु कर दें। "

चुनाँचे उस ने अपने गुरु से मशविरा किया। उन के जवाब ने कहा कि ऐसी हस्ती **पूरनपूर** में कभी नहीं आई।

नोट: अन्दाज़ यह है कि इस शख़्स को एक माह से भी कम गुज़रा, जब से इस की यह हालत शुरु हुई। इसलिये कि अब से बहुत पहले मैं एक दफ़ा और यहाँ आ चुका हूँ।

फ़क़ीरा मज़कूरा: यह हिस्सा देर में संभलेगा। एक जगह तो बहुत ही ख़राब है, वहां का destruction कर देना ही अच्छा है। **पीलीभीत** ग़नीमत है। **लखीमपुर** तक मेरा circle है।

इन के गुरु ने जो बक़ैदे-हयात नहीं हैं मुझ से कहा। मैं अश-अश करने लगा कि आप इस दुनिया में मिसाल हैं। अफ़सोस तुम्हारे गुरु महाराज को किसी ने न पहचाना। नमूना मौजूद है, नतीजा निकाल ले। मेरी राय यह है कि आप की एक हस्ती कुल कामों के लिये काफ़ी है।

(तवज्जह की इस्तैदा की) जब तक आप का क़याम यहां रहेगा, मेरा शागिर्द निगराँ रहेगा।

28-6-48 (लखीमपुर)

हज़रत क़िब्लाः फ़क़ीर की पहचानें जो तुम ने बताई हैं, सही हैं। मगर इन के समझने की कोई क़ाबलियत नहीं रखता। यह चीज़ मुझे बहुत पसंद आई। कोई मर्द हो तो पहचान करके देखें। वाक़ई तौर पर इस पहचान से काम लिया जावे तो **हज़रत मूसा** का सीन (scene) निगाह के सामने आ जावे। वो पहचान जिस के बारे में मैं ने कहा है कि सूक्ष्म रूप की तरफ़ देखे और ताड़े कि उस शख़्स की, जिस का सूक्ष्म शरीर है, क्या हालत है। इस पहचान से हर शख़्स काम ले सकता है।

ऊपर का dictation मैं ने सिर्फ़ तुम्हारी हालत के लिये कहा है। **चोबे जी** से कह दो कि उस के (सुश्री कस्तूरी चतुर्वेदी, सुपुत्री चोबेजी) सूक्ष्म शरीर का कभी-कभी मुतालया कर लिया करें। मुमकिन है कि यह ताक़त उन के मन पर अच्छी सरायत करे। मगर भाई, करते कुछ नहीं। सूक्ष्म शरीर की तरफ़ ख़याल करने से जिस stage का फ़ैज़ तारी हो, वही उस का मुक़ाम (stage) है। बाक़ी मैं बहुत सी बातें बता चुका हूँ, आगे ज़रूरत नहीं मालूम होती। समझ में आजावे तो पूछ लेना या अपनी तरकीबों को वाजे करा लेना। यह तुम पर छोड़ता हूँ।

(बसवाल **चोबे जी** कि इस ज़हमत से हटने का क्या तरीक़ा

है।)

हज़रत क़िब्लाः बला ख़ुद ख़रीदकर्दा है; और मन की आदत बिगाड़ने की और उस तरफ़ ले जाने की आदत डालने का नतीजा है। तरकीबें यही हो सकती हैं जो बताई गईं। आप यह न समझिये कि तरकीबें **रामचन्द्र** अपनी तबियत से बता रहा है, बल्कि यह मेरी हैं। प्रेम का असर मन पर अच्छा पड़ता है। और यह भी एक तरकीब हो सकती है। दूसरी तरकीब यह कि अपनी हस्ती को **रामचन्द्र** की हस्ती समझ लिया जावे और उसी पर ज़ोर दिया जावे। दूसरी तरकीब यह है कि अपने मन को **रामचन्द्र** का मन समझ लिया जावे। यह सहल उसूल हैं जो बताये गये और इस ज़माने में हो सकते हैं, वरना इस के हटाने के लिये और भी मराक़बे और ध्यान हो सकते हैं, मगर वो मुश्किल हैं।

14-7-48 (8.45 am)

(Scene of Maha Pralaya in vision)

S.V.: The Centre you have seen in the vision is the Real thing and around it was a glittering light and around that Circle there were particles disturbed (in their arrangement). They all lost what they were when the world was in existence. All of them observed (by you exist) in their backward Circle called the second one and that circle in the innermost one making a dot and only the Dot. The glittering light was the first Push. There are three

circles which become one in the end. How strange it is that a little or handful of Power creates such a big Universe. A hand-fist is the literal translation. Particles, even, do not remain.

16-9-48

हज़रत क़िब्ला: ब्रह्म रन्ध्र मक़ाम है और यह नबियों का खोला जाता है। जब दूसरे लोकों में जाने की ज़रूरत पड़ती है तो इसी मक़ाम के द्वारा जाते हैं। यह हालत हर कस-व-नाकस में पैवस्त नहीं होते। और इस के यह मानी भी नहीं हैं कि यह तमाम है। आगे और भी है। ऐसी हस्ती एक ही होती है जिस का मल्का दूसरे लोकों में जाने का हो। रास्ता यही है।

ब्रह्म रन्ध्र मैं ने इस को यूँ कहा है कि एक साहब ने मुझे इस मक़ाम का नाम यही बताया था।

कपाल क्रिया की फ़िलास्फ़ी आज तक किसी ने ग़ौर ही न की। यह हद ख़यालात की है। इस में जो कुछ भी रह जाता है, उस का भी जिस्म से जुदा हो जाना अच्छा है। इस में ऐसी आकर्षण शक्ति है कि वो छत् तोड़ते ही उस कमी में चिपट जाती है, गोया कुल का कुल आप अपने साथ ले जाते हैं। जिन का ब्रह्माण्ड शरीर छोड़ते वक़्त टूटता है, उन के साथ ही यह चीज़ जाती है।

2-11-48

S.V.: I was watching the scene at Secunderabad all through. They, doctors of Etah and Secunderabad were dim figures. I was present there not to give them spiritual advancement but to see the things with my own eyes. He (Lalaji) is always with you. Never mind if He comes or not. I am also not too far away from you. Never mind if I come to you or not. I give you dictates from my own place and can come at your call. You follow our hints. Go to Gaya and you will find me doing what I have said at Lakhimpur. I want that you may take my office just as you have taken your Guru's. You find Him busy all the time but really He is not. He is only watching His work and you are doing in His place. You do not feel even yourself what work you do unknowingly. The exhaustion you feel is for this account.

Master Saheb! have you thought of this miracle what I have talked of? A man sitting in his own cot doing all work automatically; he is not at leisure even for a minute in twenty-four hours although he does not feel it. Is there anybody to take this sort of responsibility? Why you do not feel? Because your mind will take the double force, feeling and working together. Is there any personality always busy with such a work of godly nature. Can anyone award it? No, I think not.

हज़रत क़िब्लाः भाई समझो तो सही यह काम। होश उड़ेंगे अगर लोगों को ख़बर हो और यक़ीन करें।

S.V.: A handful of bones having capacity for such a work. Brainless person can do it. You go in **sushupti** sometimes with shovel in your hand although everybody there is quiet.

6-11-48 (10 PM)

(बसवाल कि **क़ानून क़ुदरत कैसे बने**।)

हज़रत क़िब्लाः क्या बात इस वक़्त ख़याल में आई। इतनी आसान है मगर लोगों की निगाह इस तरफ़ नहीं पहुंची। दुनियाँ जानती है कि आग़ाज़े आलम हुआ। आग़ाज़ से हर चीज़ आग़ाज़ हो गई। अच्छा मान लो, आग़ाज़ तमाम हुआ। फिर क्या हुआ। vibration - यह उस का ख़्वास था। क़ानून नहीं कहा जा सकता। अच्छा, vibration शुरु हो गया। दुनियाएं बन-बन कर तैयार हो गईं। किस के लिये। रहने वालों के लिये। अब आप तशरीफ़ लाये। और दीगर साहिबान भी। समझ लो कि आप ही सब से पहले तशरीफ़ लाये। और दीगर लोग उस के बाद। तो, यह तो भाई मानना ही पड़ेगा कि नौवारिद को हैरत ज़रूर होती है। देहाती को हवाई जहाज़ अचम्भा मालूम होता है। क्या हैरत को vibration या हरकत की ख़ामोश हालत नहीं कह सकते। या यूं कहो कि यह हैरत vibration की माँ बन गई। अच्छा जो पहले आया, हैरत इस बात की हुई कि हम कहां आ गये। गोदा दूसरे मायनों में बांधें खिल गईं। सोचने लगे। हैरत के साथ सोचना उस वक़्त तक रहता है जब तक कि हैरत अपनी आख़िरी हालत न लेले। इस आख़िरी हालत पर पहुँच कर चीज़,

जितनी बन्दगी इजाज़त देती है, खुलने लगती है। अच्छा यह बात तो हो गई। हैरत में वो हज़रत पड़े ही तो थे, अपने खाने दाने और ज़रूरियात की फ़िक्र हुई। इस की link उस ख़ित्ते से जुड़ गई। अब गोया इस की ख़बर आख़री हद तक जाने लगी। ज़ोर तो अपने साथ आप लाये ही थे और ख़ालिस रूप में आप आये भी थे। लगाव इस वक़्त तक न था। इस क़दर जैसा आप देखते हो। यह चीज़ आप की ख़ालिस ही थी। और भाई, इस काम को करने में इस लिये ज़्यादा वक़्त नहीं लगा। लिहाज़ा जो ख़यालात आप के उस ख़ित्ते तक पहुंचे, उस की रवांईदगी और परवरिश का इन्तज़ाम आप की उस लडी ने बना दिया। लिहाज़ा वो मुबारक शकलें और सूरतें पैदा हो गईं कि जो इस काम के लिये ज़रूरी थीं। अब अगर यह कहा जावे कि नहीं, यह सूरतें पहले ही से मौजूद थीं तो ग़लत यूं हो सकता है कि असल चीज़ की सूरतें तो असल से निकलीं और उन्होंने अपना काम शुरु किया। नतीजा बरामद हो गया। अब जो चीज़ कि ख़ुलूस के बाद कही जाती है, वो चीज़ आप ही पैदा करेंगे। क्यों कि ख़ुलूस के बाद आप ही की हस्ती है। अगर यह कहा जावे कि कहीं इस ख़ुलूस ने यह शकलें भी ख़ुद ब ख़ुद पैदा कर दीं तो भाई क्या यह कहना ग़लत होगा कि इस में जब दूसरी चीज़ शामिल नहीं की गई तब यह तीसरी चीज़ कहां से बरामद हुई। ख़ुलूस से ख़ुलूस ही रहेगा और उस के बाद वाली हालत, जो कुछ कि हो सकती है, उस की शक्ल बाद ही वाली हालत से पैदा होगी। अच्छा साहिब, ज़रूरियात की मन्शा तो मालूम हो गयी, वो चीज़ें आप ने हैरत के दायरे में बना दीं। जिन की ख़बर उन ताक़तों को हो गई कि अब उस medium पर हम को काम करना

चाहिये। दूसरे लफ़्ज़ों में आप ने गोया एक base बना दी जिस पर कि क़व्वाए-क़ुदरत अब काम करेंगे। आप ने अपनी ज़रूरत के लिये अब सामान Nature में ऐसा डाल दिया कि इस की energy उस पर मब्ज़ूल हो गई। गोया आप ने एक धार ऐसी रवां कर दी कि जिस का रहना लाबुदी हो गया। Broad sense में यह चीज़ आलमगीर हो गई। और इसी के ज़रिये से बहुत से काम ऐसे हो गये कि उन चीज़ों को मोहइया करने के लिये वक़्त-वक़्त पर energy और ताक़तें काम करने लगीं। इस तरह पर गोया उन्होंने एक सतह क़ायम कर दी और हर चीज़ इस में से हो कर झलकने लगी और काम शुरु होने लगा। अब क्या था, आप ने कुछ न कुछ हर ज़ी-रूह के लिये इन्तज़ाम कर दिया। कैसा, कि जिस से सब की energy भी बढ़ती रहे। गोया आप ने एक मेंढ़ बांध दी कि इस से बाहर अब यह ताक़तें नहीं जा सकतीं। और यही चीज़ें उन के काम की मरकज़ बन गईं। दूसरे मायनों में यह बात उन में ऐसी जागुज़ीं हो गई कि उस के करने के लिये वक़्त-वक़्त पर तैयार रहने लगे और उन को गोया दूसरे मायनों में इन-इन बातों के करने में मजबूर हो गये या उस को अब करने ही लगे। अब उस के बग़ैर किये हुये वो रह नहीं सकते। उन के लिये अब यह उसूल बन गया कि वो उस काम को उस वक़्त तक करते रहें जब तक कि जनाब अपनी उस भेजी हुई चीज़ को ख़ुद छिन्न भिन्न न कर दें। अब जनाब के लिये यह चीज़ फ़राहम हो गई और एक बिरादरी क़ायम हो गई। हंसने खेलने लगे। आप के action मुख़्तलिफ़ अब होने लगे। हर part आप play करने लगे। हर रूप आप रचने लगे। हर रंग आप अपने में लाने लगे। हर चीज़

मुख़्तलिफ़ अब आप में पैदा होने लगी। हर रंग अब आप में जुदागाना काम करने लगा। हर काम अपना जुदागाना रास्ता बनाने लगा। हर रास्ता अपने आप को दिखाने लगा। उस में रूख भी जमने लगे। घास भी उगने लगी। ख़िजाँ भी आने लगी और बहार भी। मुख़्तलिफ़ सूरतें पैदा होने लग गईं। मगर भाई, इस एक ताक़त के मातहत वो ताक़त थी जिस को शुरु में आप ने बनाया था। अब भाई, यह सब बातें तो होने ही लगीं, और इतना आप को मालूम ही रहा कि अस्ना-ए-ज़रूरत के लिये हम में ही से कोई साहिब इन्तज़ाम कर चुके हैं। अब यह बातें जो मुख़्तलिफ़ अन्वान से होने लगी हैं यह भी किसी शिकंजे के अन्दर होना चाहिये। अब फ़िक्र शिकन्जे की हुई। किस को। आप ही में से एक को, जो उस वक़्त बहुत ज़्यादा थे। सोचा कि अगर यही बातें मुत्वातिर होने लगीं तो यह हंसी खेल की दूसरी शक्ल रोने की भी हो सकती है। और भाई, जब यह होने लगा, मुत्ज़ाद शक्लें पैदा हो चलीं। रोने के साथ हंसना दोनों बातें शुरु होने लगीं। हर रंग की मिलोनी (यानी आमेज़िश) से तीसरा रंग अब शुरु हो गया। अब सब ने मिल मिला कर तोदे की शक्ल इख़्तियार कर ली। ख़ुदा जाने ऐसे कितने तोदे बन गये। देखने वाले को हैरत हुई कि अब इस दुनियाँ में जाने कितने ऐसे तोदे तैयार हो कर रहेंगे। मुमकिन है यह चीज़ उन्हीं से भर जावे। घास बढ़ते-बढ़ते जब बड़ी हो गई तो कुछ तो पतील की शक्ल में नुमायाँ हुई, और कुछ और शक्ल में। किसी में धार पैदा हो गई। यहां तक कि किसी का दामन उस में कतरने लगा। किसी की उंगली उस में ज़ख़्मी होने लगी। बाग़बाँ को फ़िक्र हुई कि अगर यही चीज़ें क़ायम रहीं और उन को काट न दिया गया तो हर

आने वाले को यह तकलीफ़ देंगे। खुरपा और हंसिया से काम लेने लगा। तकलीफ़ देह चीज़ें कटने लगीं। करते-करते यहां तक हुआ कि वो जंगल या झाड़ जो इस बाग़ या जंगल में उगा था, साफ़ हो गया। फिर बढ़ आया। ख़याल हुआ कि इस को अब जड़ से निकाल देना चाहिये। खुर्पी से निकालने लगा। और बहुत कुछ निकाल दिया। यहां तक कि जड़ तक साफ़ कर दी। मगर क्या देखता है कि आस्माँ से पानी गिरा और न मालूम कोन रेज़ा कहां पर रह गया था। बाग में घास और पतील ज्यों की त्यों हो गई। समझ में आ गया कि भाई, इस का बीज किसी न किसी शक्ल में इस ज़मीं में पड़ चुका है। लिहाज़ा वो बेचारा मेहनत करता रहा। और चन्द दिनों के लिये हर चीज़ साफ़, और हमवार ज़मीन करदी जाती है, और रुईदगी होने पर वही process दोहरा दिया जाता है। अब आप ने जो रंग और जो बातें और जो हंसी खेल पैदा किये और जो तोदे बनाये, उन्होंने ऐसा बीज पकड़ लिया कि अब तो भाई वो बिला जमे हुये नहीं रह सकता। आप ने तो इन बातों की जड़ें उस vacuum में पैवस्त कर दीं जिस को आपके मूरिसे-आला, ने हैरत की सक़फ़ लगा रखी थी। इन्हीं की पैवस्तगी में आप अपनी भी पैवस्तगी करने लगे। खिचड़ी आप ने वहां भी पकाई। साफ़ चीज़ में आप ने amalgamated परमाणु को पहुँचा दिया और वो उस साफ़ चीज़ के क़रीबतर पहुँचने लगे। अब भला बताओ, अगर माली उन की काँट छाँट न करते तो यह हर शख़्स को ऐसा ज़ख़्मी करें कि वो लहू लुहान रहे। चुनाँचे देखने वाले की निगाह यहां तक पहुँच गई। उस ने उसी क़ायदे के बमूजिब, कि ख़ुलूस महज़ ख़ुलूस पैदा कर सकता है। भेड़िया, भेड़िये का बच्चा ही

पैदा कर सकता है, शेर का बच्चा नहीं। उस ने मुख़ातिब हो कर उस की कांट छांट शुरु कर दी जैसे कि माली ने जो कि मालिक का नोकर था, बाग़ में काँट छाँट शुरू कर दी थी। उस का हंसिया चलने लगा, जिस के असर से उस की जड़ें हिलने लग गईं। यानी उस तोदे पर हंसिया चलने लगा जिस की जड़ आप तक गई थी। जब .... उस की energy ने अपने ख़याल के हंसिया से फुंगी पर काम किया तो उस की जुम्बिश उस को अलैहदा करने के लिये जो उस के सिरे पर हुई, उस की गड़बड़ी को आप इस शक्ल में ख़याल कर सकते हैं। गोया एक बीमारी जिस्म के असर को ग़ायब करने के लिये पैदा हुई थी। अब जनाब ने वो रास्ता भी बना दिया कि रंगने वालों की और हंसने वालों की तोड़ फ़ोड़ भी होती रहे कि वो उस ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ जाने से सज़ा भी भुगतें। उसकी energy अब काम कर रही है। ख़ूब आप के लिये उस ने इन्तज़ाम कर दिया और ऐसा हुआ कि अब उस को करते ही बनेगा। हर ख़राब काम के लिये अब हंसिया मौजूद हो गया ताकि यह धार बन कर दूसरों की काँट छाँट करे। आप ने इस सतह में यह नक़्श भी बना दिया कि यह इन्तज़ाम भी क़ायम रहे कि हर चीज़ ऐसी तेज़ और धारदार न बन जाये कि सब का क़लाअ-क़माअ ही करती रहे और सब लोग इस से मजरूह रहें। भाई हम ने भी देखा कि अब तो जो पतील बढ़ती है, उस के काँट छाँट के लिये ऊपर से हंसिया गिरता है। डरने लगे, ख़ौफ़ खाने लगे। उस के बनाने के बाद restraint की कोशिश करने लगे। किसी साहब ने बेहयाई भी इख़्तियार की, कि अपनी रंग रलियों से बाज़ न आये और वो इस चीज़ को अपने सीने पर लेते ही चले गये। मगर भाई, हंसिया

का गिरना और आप का काम बन्द नहीं हुआ। उन्होंने रंग-रलियाँ अपनी बन्द नहीं कीं। आप ने हंसिया की तेज़ धार ख़त्म नहीं की। गये, सीने पर शरारत ले गये और जब भर्रा गये, और तेज़ शरारा अपने में पैदा कर लिया। और न मालूम ऐसे कितने असहाब होंगे कि जिन्होंने अपनी तरह की शक्लें हज़ारों क्या लाखों तैयार कर दीं।

S.V.: Look here, Ram Chandra! These things are unexplainable. One cannot understand unless one goes there. It is very difficult to find a man like that. A man can only understand these things if he has the power to read the vibrations. The other will read it and it will all slip from the memory. They will read a silence and forget other. They cannot grasp the sense. They cannot as well deny it, because (due to the personality) it is coming from the President of the Mission. Such things cannot be expanded. They will always be abridged. I dare say, what your Master has expanded, nobody can do it. If anybody tries to expand it more, it will become ambiguous and un-understandable. Knowledge fails here. Vibrations always cannot be brought in words. That is why many things have gone by themselves. You always connect the link for the work, remember. Nature does nothing. You make your own laws, but because you are the servant of God, so you dedicate everything to Him. Of course, it is our duty too, to remember the Master in any way possible. But for philosophical mind, it has became an impediment

by itself. A man can only write this sort of subject; One who has freed himself from all these things. When can you free yourself? At the stage of perfection, which a human being can reach, where God and you cannot be differentiated. Such thing is very rare.

21 नवंबर, सन् 1948 ई०

वक़्त 7 बजकर 15 मिनट शाम

हिदायतः हरी तुम ने अज़ीज़ **रामचन्द्र** के ख़तूत देखे होंगे। क्या तुम उन के मतलब आसान समझते हो। हर जुम्ला तश्रीह तलब है। अच्छा, आसान इबारत ले लो और फ़िर उस पर ग़ौर करो। सब से आसान चीज़ मैं लेता हूँ जो **चोबेजी** के ख़त में मोरख़ा 18 नवंबर को भेजा गया, अभी हाल में लिखा है। मेरी जो कुछ कि हालत आप लोगों के सामने है, यह उस बुज़ुर्ग की हालत का करिश्मा है जिस ने मुझ से मुहब्बत की है। क्या इस में महबूबियत की बू नहीं है। कितना इख़लाक़ छुपा हुवा है कि मुहब्बत करने वाला दूसरे को समझा। और सुनिये, आगे लिखा है, यह उस बुज़ुर्ग की हालत का करिश्मा है। वरक़ रंग जावें अगर इस की तश्रीह की जाये। इतना अच्छा यह जुम्ला चस्पाँ किया है कि यह बताता है कि क़ुदरते कामिला बन्दे में किस तरीक़े से मोजज़न है। बाज़ीगर जब कोई खेल बनाता है, अस्ल में वही उस में काम करता है। चीज़ बनाई हुई उस की, बिस्तार (विस्तार) उसी का। अक़्ल की रवानी उसीकी। ख़यालो धार उसी की। सोचा हुआ उसी

का। अब बताईये, कौन सी बात रह गई जो उस का पसारा साबित नहीं करती। अब करिश्मा ऐसा भी हो सकता है कि magic वगैराः दिखला दिया जावे। मगर यहां और बात तहरीर की है। **हालत का करिश्मा**। हालत वही हो सकती है जो मेरी काफ़ी development के बाद हुई थी। अब हालत का करिश्मा यही हो सकता है कि वही चीज़ लतीफ़ हालत में सरायत करे। अगर यह हो गया तो बन्दगी भी क़ायम रही और तोहफ़ा भी मिल गया। असलियत भी आ गई, इस लिये कि वो चीज़ जिस का अक्स उन पर पड़ा, काफ़ी develop हो चुकी थी। हाँ यह etiquette याद रखो। Etiquette को कभी रुख़सत करना नहीं चाहिये, ख़्वाह इन्साँ **धुर** तक पहुँच जावे। यही etiquette आगे चल कर बन्दगी बनाता है। आगे चल के यह बात etiquette रहती ही है। यह कुल ख़त अख़लाक़ से पुर है। एक लफ़्ज़ कि मजनूं को 'ख़ुदा से वास्ता', यह उस की दीदा दलेरी है।

13-1-49 (9.40 pm)

मीरा बाई: भाई, तुम को यह ग्लान अक्सर रही कि मैं मुहब्बत नहीं कर पाई। और क्या मुहब्बत होती है कि एक ज़ात हो गये, फ़र्क़ नहीं रहा।

16-1-49

प्रिया बेटी कस्तूरी,

शुभाशीर्वाद,

मुझे हर्ष है कि ऐसे अच्छे पत्र आध्यात्मिक उन्नति के मिल जाते हैं। ईश्वर को धन्यवाद है। मुझे तो कोई नहीं पूछता और न मेरी कोई ख़बर लेता है। और पूछे भी कौन, जब कि मेरे पास ज़ाहिरा कोई दौलत मालूम नहीं होती। लोग आते तो अवश्य हैं और मुझ से सीखते भी हैं, मगर बहुत कम। एक आध इस ग़रीब को पत्र द्वारा पूछ लेते हैं। मेरे पास अब सिवाये ग़रीबपन के और कुछ नहीं है जिस से लोग मेरी तरफ़ आकर्शित हों। तोशा तो मैं ने रखा ही नहीं, इस लिये कि अब सफ़र तो करना ही नहीं है। अब अगर मैं किसी से यह कहूँ कि तुम सफ़र करो अपने वतन का, तो वो क्या यह कहने का हक़दार नहीं है कि ऐसे सफ़र से दर गुज़रा कि मन्ज़िल हासिल होते ही या उस पर पहुँचते ही अपना तोशा भी खो दूँ। सामान जब सब खो दिया तो अब मेरे पास रह ही क्या गया। क्या सफ़र का यही नतीजा है? मेरी बात चीत और सतसंग से जब लोग यह जानने लगते हैं, तो उन की तबियत अक्सर हटने लगती है। इस की मिसाल एक शाहजहाँपुर में मौजूद है, तो प्यारी बेटी अब मेरे पास क्या है जो मैं तुम सब को दूँ। अगर खोई हुई चीज़ फिर हासिल करने की कोशिश करूं तो भी नहीं होता, इस लिये कि मैं ने उस से इस सफ़र की क़ीमत अदा की है। अब रह क्या गया मेरे पास। बस कुछ नहीं, और इस को लेने के लिये इक्का दुक्का कठिनता से तैयार होते हैं। तो क्या तुम्हें यह चीज़ भली मालूम होती है? प्रेम और मुहब्बत जिस को तुम चाहती हो मेरे पास अब वो भी नहीं रहा जो तुम को दे डालूं। हां, यह हो सकता है कि हम तुम दोनों हाथ पसार के ईश्वर से इस को देने की प्रार्थना करें। उस में डर यह भी है कि कहीं उस ने (ईश्वर) यह कह दिया कि जिस

ने अपना सब कुछ मुझे दे डाला तो क्या अगर प्रेम दिया जावे तो क्या यह ग़रीब रख सकेगा। मुमकिन है कि ईश्वर तुम को अपना प्रेम दे देवे। और भाई, अपने लिये मुझे शक है कि जाने वो देगा या नहीं, इसलिये कि मेरी क़लई उस पर खुल चुकी है। तुम ने अपनी जो कुछ भी हालत लिखी है, डर है कि कहीं धोखे से मेरी तरह, इस सफ़र की क़ीमत अदा न कर दो। और एक ग़रीब बेनवा (बे-सरोसामान) की तरह कहीं न बन जाओ।

तुम्हारा शुभ चिन्तक,

रामचन्द्र।

S.V.: Had I been living (at) this time, I would have given you the degree of doctorate in spirituality. How beautifully you are expressing the idea of Bhakti. Who values it? Time to come! I have been so long in the world, I have not seen a person like yourself. That is why I was wanting in representation. After a long time I made you, rather we made you such to represent myself. Had you been graduate of some University like myself, I guarantee that you would have taken the world like myself in your own hands. Allright I give the degree of doctorate in spiritualism from this very time. Imagine boys, how playfully he writes (on) such a difficult subject. It requires commentary on each point. It is not the time for you to engage yourself totally to realise him (Ram Chandra). The world will laugh, rather hoot at this subject so beautifully

arranged because they have no brains to understand it. Have you seen Chaubeji! Such a man in your family of Bhaktas (devotees). I dare say such type of character is not to be found anywhere. My Master (your Guru) was glad enough to have him and we are exceedingly happy to have such a man. He will change the face of the world. Let the time come. Sooner or later. A man sitting on his own cot with skeleton of bones on his outlook show, always busy with doing nothing! What it is, do you (Choubeyji) understand? Ask him. See, what he replies. It is the mystery to be solved by you all. Let all of you try to answer it. Don't call him a lazy fellow. He may be lazy at some other work but he is passing the busiest portion of his life. Let the answers come. Ask Master Saheb first. I will reply then. I say again and again, the time will not come for a thousand years to come. You will not see the face of such a personality ever, I guarantee. It is your folly to miss such an opportunity. These words were repeated by me several times but nobody awakened from his sleep yet. That is their misfortune. What a personality has been made! The people will wonder if they understand a little. Destruction on one side, (and) construction on the other! One power has been allotted upto this time to the Bhaktas. The other has been reserved for you only from the time long..... **Lord Krishna** was aware of your personality when He left the world and you have come for the purpose. That is the only work before you. Were you (there) during the days of **Lord Krishna**? Long before (that) you were (in physical form) but

not at that time. **Patanjali** had breathed his last but could not secure his position in the **brighter world**. Time for him has now come for liberation. The rest is in my notes already. Seeker of God, you were throughout your career in the past. Such a note is not to be thrown in waste-paper basket but everybody must have to copy provided he has faith in you. Again and again, I am repeating the same words for you that the time is passing on. You (boys) are doing nothing. What he leaks out, you can't get even if you fall into the penance for years. He is always in hurry to give you spiritual stages. That is the work generally done by such a personality of calibre. After **Lord Krishna** you are the only personality. Nobody can imagine it. There are sages who know already this secret but a few in number. Was it possible for **Gandhiji** to obtain swaraj? Never! Do you know the secret of **Hitler** of going from this world. It will work havoc in **Europe**. See the result coming. Be prepared. Much allowance is being paid for your brain. But you will have to do yourself. One thing I have to ask which must not be out generally. The powers of Nature have grown sluggish in this work for want of proper power required for this work. Nobody has the power in the world and abroad (beyond) to bring them into real action again. It is your duty now to bring them into proper use and prepare them for the work ahead. **Choubeyji** will tell you what are the powers of Nature working or you will probably find somewhere in your notes either written by yourself or by my directions somewhere.

Sun shines but nobody knows that it is losing its capacity day by day. Moon has the same effect over itself. It is the backside of sun. Wonder how you are to be engaged. You have no business but what is required of you by Nature! You are the instrument of Nature and not the tools of anybody. Do the work. Instructions will follow. **London** is waiting for you and many other countries as well. (This will all go in my notes). Get them typed for others who have faith in you but not the last few lines. I have said sufficiently for the day. My Guru is telling me now to extinguish his own lamp. What is the use of keeping such a Sanstha which has already gone to dogs. Spirituality has gone away. It now cannot return. There are others who must meet the same fate. Your Lord has broken his own one. I am also breaking my own. Created thing must go away, then can swim the real one. That is the law of Providence. Change and change, overhaul and overhaul, destruct and destruct, construct and construct; build the temple of yours on the bones, on the ashes and the blood, mixed together it will work as mortar for building of super type of temple you are to erect. These are the things required for such an everlasting temple. Build and build on the bones, on the ashes with blood and ruins. I do not want the **sanyasis** of the type. They are being built by their Gurus. I do not want Gurus of such a type. I do not want such Gurus as well. They must be wiped out from the face of the earth. I do not want the type of sanyasis you have seen often at different places. Exercise

your special will bestowed by Nature and finish the work. Nobody has glittered among you to give such a work as a help to you. The people are still sleeping. They do not value you.

1-2-49 7.30 pm

Look here boys! You are assembled here to commemorate the birth ceremony of our Master. This is the most important function of the Mission. It will be commemorated by all of the times till the world exists. This is the note for the coming generation.

2-2-49 8.30 am

You should extinguish the lamp **in toto** of the modern type of Rishis playing and springing on their own individual mind. They have their deep connection with the strata of their individual minds. The work must begin from today. They are working havoc in the spiritual era at dawn now. They are meddling with your affairs. Take out their lives and put them on the point of destruction, if needed. They have spoiled the public, instead of giving them spiritual approach. They are hunting after their own names. Name-seekers and hunters are not rquired at all. You have to prepare a broader field for work. Time is fast approaching when the world will appear like a glittering star of the morning. You will lay the foundation of the world afresh. You need not ask me if you want to put any

person of higher or lower personality to the point of destruction. You know your own ways and do it accordingly. Banish the idea from your mind permanently that you do any wrong in this matter. Leave these things to dogs. A man of your personality can commit no wrong because you have come for the purpose and you have been made as such. The man you are thinking about is not worthy to be kept in society. I do not want such personality in existence. B..... revival must go totally. Put fire.

I want to keep you as my son and **Kasturi** as my daughter. (Here **Choubeji** offered her to him as his daughter) Then keep her for Mission's work. Tell her to start from today. hurry up, hurry up. I think she can write well. Let her appear in the paper first.

5-2-49 (9.00 am)

Last night's version for Mr. **Mudaliar** about his liberation as a reward of work in Southern India was done without thinking. Such kinds of promises must not be done in future. You have taken the sacred pledge for it. It is too much. You do not realise yourself, what you are! The thing had been reserved for him. This is not a childish play. You know your own responsibility and be sure what you are thinking about will come to pass. That is the "Godly Will". Let time come and you will see your success. Your service to the Mission and sacrifice will be written in gold-letters.

You are doing much. Have you seen a man like him ever in your life who has no other business but the service of the Mission. It has become the paramount thing in his life. It will weave the future destiny of the Mission. He has undaunted courage with boney face, no doubt. We have given him all (that) we possess. He is reigning throughout but thinks himself a servant. A man of such a pious idea is to be esteemed everywhere but he is neglected. Even his brothers have left him. He is all alone putting himself to the work of Almighty. Success will surely dawn. Be sure. I find the germs everywhere. The speciality in him, you will find that he does all the work but the idea of doing it is totally absent in his mind. Is it an ordinary thing? Is it not worthy of the job he is enjoying? He is negative in toto. I tell you again, you will not find such a type of character anymore, when he is gone from this momentary world. You will not find such a character anywhere. These are my words. Are they not suficient to creat faith in you? We are all telling you and crying for it what he is about. I tell you again the same thing what we have repeated so many times. Will you awake from your sleep when he is gone? Is it not the place of my Master? Can anybody, present or past, but Himself boast of making such a man as **Ram Chandra**? He is the only personality who can boast of it? The thing is to be written with gold in big letters.

This practice must be introduced for the trainers to

follow, others are also allowed.

मज़कुरा बाला जुम्ला बसवाल पंडित रामदास जी है कि कोई तरीक़ा ऐसा रायज किया जावे जिस से कमाल फ़ायदा हो।

(तरीक़ा ज़बानी इरशाद हुवा और ख़तूत में तहरीर है।)

I find persons in delirious condition generally. They are still in the same slumber. The scythe of time will teach them. The sharp pointed spear will make them correct. It is at their heads, though they do not know. They are being doomed with their own hands. Nature's will must come to pass. Their fate must be regulated by the point of spear.

15.3.49 (8.30 pm)

You cannot escape from going to the quarters allotted for your work. All are of the opinion that you should start without further delay. Work is suffering extensively. Go just after the enquiry work you will find there in plenty. Go to **Gaya** and **Benares**. **Nadia,** if you cannot reach take it from the corner you settle in the journey. B.D. everwhere. You have neglected **Delhi**. You are sure to go there. Leave this time the journey of **Jagannath Puri**. Only two places are given to you this time. The Rishi nearby will remain your charge. Yesterday, you were talking about the Sun's heat, that it is losing its natural phenomena. The same thing reacts on me. It is not

the work to be pondered over nor is it so difficult as it seems. let the scientists try first. Your turn will come in the end. You have to weave the future destiny of the world. All these things are favouring you in the work of destruction. These are the helpers. When you have finished the work, make them alright but let the time come on the grave. I shall try you when it is needed. Prepare the field just as you have been preparing so long. Then draw the attention in toto of the various powers of Nature to work at your command. So there is no hurry about the sun or the moon. When this work will go to the hands of the public, the scientists will be alert to measure the heat of the sun. They will then realize that God can produce such a big Rishi in the world. It will be out in itself. All these things should go to the press after you. I instruct all of you, boys! Take the solemn oath for it. These things are not to be found anywhere and such a type of work was not bestowed with, ever before it. That is the special feature. It is a minute's work to set the sun alright and half a minute's work to set the moon aright but let scientists fail in their attempts. You can make research about the sun if you like. You have already said somewhere though a little about the sun and its product, in your way. That will help you in your work. I tell you **Mahatma Buddha's** version about you and your work. Do not fail to proceed to **Bodh Gaya**. Change it thoroughly. Much time will be spent in **Gaya**. The rest I will tell you when you will require. Work you will be getting in the way.

3.4.49

You are meditating on the work of **Gaya.** There is ample work before you; so much so that you cannot raise your head up for seven days. I am vacating my office for you as per note somewhere as a reward for the work. Thorough overhauling is required there and deface it altogether. Happy is the time that you are born for the occasion. World is demanding change and you are the only authority for it We cannot put our hand in it. You are the sole master for its working. The work is only upon your shoulders and you are the only man deputed for it. Start tomorrow without fail. Can you compare this work with that of anybody? Is there any man fit for it? Is it not a miracle? Snake charming is something else and that is the conjurer's work. I call the persons as snake charmers who for mere show acquire some powers, only locate it for the special work. They have no trend of spirituality in its correct sense.

3-4-49 (9 pm)

श्री कृष्ण जी महाराज: इस मिशन के लिये तुम्हारा जन्म दिन मनाना कुछ कम अहम् नहीं है। ऐसे शख़्स का अगर जन्म दिन न मनाया जावे तो फिर कौन शख़्स ऐसा हो सकता है जो जन्म दिन मनाने के क़ाबिल हो। **चोबेजी** को यह बात ख़ूब सूझी और शुरुआत उन्हीं ने की। फ़ैज़ की बख़शीश 24 घंटे उन के घर पर रहेगी। मैं इस

बात से इस क़दर ख़ुश हूँ कि **चोबेजी** का इस एवज़ में बेड़ा पार कर दूंगा। माँ जिन को तुम ने ऐसा माना है, वाक़ई तुम से मुहब्बत उसी भाव से कर रही हैं। इन दोनों में किस का हक़ फ़ायक़ है। मैं समझता हूँ तुम्हारी माँ का (यानी चोबेजी की बीवी का) लिहाज़ा वो भी इस से नहीं महरूम रह सकतीं, यानी दोनों को फ़ायदा होगा। अब तुम सफ़र को जा रहे हो। घबराओ नहीं, काम मौक़े पर दिया जावेगा। **मास्टर साहेब**, यह ख़त जो इस ने (RC) आप **पुत्ती बाबू** के लिये लिखा था, ग़ौर किया। किया नहीं? यह सब इसी की तारीफ़ थी। कोई हस्ती अब तक ऐसी नहीं आई। किसी के ख़्वाबो ख़याल में यह बातें नहीं आ सकतीं। कहो तो बेक़ूफ़ बनायेंगे। मै समझता हूँ यह ख़त उसी नोट बुक में नक़ल हो जाना चाहिये। गुरु का क्या कहना जिस ने ऐसी हस्ती बना दी। मास्टर साहेब। ऐसा बनने की कोशिश करो। जादूगरी हर जगह मिलेगी। और यह चीज़ आम है। किसी शक्ति को master कर लिया, तरह-तरह के miracles सरज़द होने लगे। वाह (शाबाश) कहीं इस तहरीर का ठिकाना है। क्या किसी के दिमाग़ में यह बात आ सकती है। क्या किसी में इस के सहन (बरदाश्त) करने की क़ुव्वत है। क्या कोई यह सोच सकता है कि जहां पर ऐसे शख़्स का ठहराव होता है, वो ताक़त अपने जिस्म में रवाँ नहीं कर सकता, इस लिये कि जिस्म में उस के बरदाश्त की ताक़त नहीं, फिर वहां रहना कैसा। यह चीज़ वाक़ई अमल ही से अदा हो सकती है।जहां तक कोई न पहुंचा हो तो किसी पहुंचे हुये की बात कैसे समझ में आवेगी। आगे भी इस क़िस्म की उम्मीद शायद ही हो सकती है। यह चीज़ें, मैं समझता हूँ कि इन्हीं (RC) के लिये reserve थीं। यह चाहता

ज़रूर है कि सब ऐसे ही बनें। अब इस will से जितना जिस को फ़ायदा पहुंच जावे। क्या ईसार नफ़्सी है, कोई समझ सकता है? क्या दान है, समझ सकता है कोई शख़्स? तुम लोग, बताता हूँ, तरसोगे। इन को ज़रूरतन् यहां रखा जा रहा है। **यह इन के गुरु महाराज की ताक़त है जो इन को इस दुनिया में रोके हुये है।** और भाई, गुरु भी कैसा, जिस की हर वक़्त धार रवाँ रहे और परवाज़गी को रोकती रहे। ख़ैर कह दिया। मानो या न मानो। यह तुम्हारा इख़्तियार। मैं इन को रामेशर (**रामेश्वरम**) में अपने साथ रखना चाहता था, मगर रोक दिया गया। मजबूर क्या था, इस की हालत commanding! ऐसे लोग, याद रखो, ज़्यादा नहीं रुका करते। हां, ऐसा गुरु अगर मिल जावे तो वो इन्हीं के लिये हो सकता है।

(नोटः 4 अप्रैल सन् 49 ई० को 11 बजे दोपहर के वक़्त **शाहजहाँपुर** से रवाना हो कर क़रीब दो बजे शब को **गया** पहुँचे। बाक़ी रात मुसाफ़रख़ाने में क़याम कर के सुबह 7 1/2 बजे धर्मशाला सूरजमल मारवाड़ी, जो शहर में तीर्थ के कुछ क़रीब है, कमरा न० 8 में क़याम किया।)

5.4.49

वक़्त सुबह 8 1/2 बजे मक़ाम गया

हज़रत क़िब्लाः गया में काम बहुत है। आज आराम करो। सुबह से काम शुरु होगा। छुट्टी काफ़ी है।

S.V.: Look here, **Ram Chandra**! You are specially deputed for the work of **Gaya**. At each step you are praised. Why? You deserve. At the same time the underlying motive at the bottom is that you do not realize your power and capacity because you are in the perfect state of forgetfulness, seldom gained by anybody. That is the tonic for the working. People may say anything. Do not mind. The thing is totally gone from you. I mean the stage of **Ahankar** (अहंकार) You cannot ever and after creap into it in any form. Rest assured. Your working is not limited to this world, you know already and you are sometimes unknowingly busy with the work. That is why pressure or headache in your brain is often felt by you.

एक बज कर 15 मिनट दोपहर

श्री कृष्ण जी महाराज: मेरे क़दम इस सरज़मीं में पड़ चुके हैं। **बानासुर** की लड़ाई का वाक़या सही है। **अनिरुद्ध** का clue मुझे यहीं से मिला था और रास्ता भी।

6.4.49

S.V.: You will destruct every part of **Gaya**

completely. I do not want that this kind of **Gaya** may continue further. This is baseless and has no foundation. The disturbers should b put at the point of spear.

हज़रत क़िब्लाः भाई, यह मामूली काम नहीं। बहुत मेहनत का काम है। इस क़िस्म की बातें जो हिन्दुओं में रायज हो गई हैं, उन्होंने मज़हब को बदनाम किया है। यह सब तुम को निकालना है। अगर चाहो तो ऐसी बात पैदा कर दो कि नाकारा और unwanted elements ख़त्म हो जावें। जब तुम्हारे हाथ में ईश्वर ने यह काम दिया है तो इस को पूरा करने के लिये जो ऐसी बातें लाज़मी हों, वो हटाई जा सकती हैं। जो elements कि ज़रूरी नहीं हैं और बायसे ख़राबी हो रहे हैं, उन को हटाया जा सकता है। इस काम को ख़त्म कर के ही यहां से हटना होगा। **गया** को शुद्ध करने की ज़रूरत नहीं।

(नोटः बाबत एकसास ख़ुदः 5 अप्रैल को जिस वक़्त शहर के अन्दर दाख़िल हुवा, शहर की हालत यह थी गोया कोई चीज़ दिल के ऊपर दबाव या pressure पैदा कर रही थी। ख़याल दिलाने पर **मास्टर ईश्वर सहाय** को भी एहसास हुवा। इस चीज़ को अपने दिलों में टक्कर खाने से रोकना पड़ा। यह यहां की हालत थी जो दिलों में चक्कर लगाती थी। यह भद्दापन होने की पहचान है कि किस क़दर ठोसता यहां के वायू मण्डल में क़ायम हो चुकी है। यह इस तीर्थ का हाल है जहां लोग परवानावार गिरते हैं। अगर बुज़ुर्गों की निजात के लिये रुपये का ख़र्च न होता।

हज़रत क़िब्ला: यहाँ पर प्रणाली जो रायज है वो क़तअन् नहीं रहना चाहिये।

S.V.: Total annihilation - (B.D.) This is common everywhere. You should not ask this thing any further. This is your main play of Drama. In the night you do this thing. I will tell you the place where ladies are carried for corruption. It is on this corner. (Pointed to approximately S.W. Corner of the Dharamshala where we were staying). There are ladies of this type here as well. The man who came to you for alms is not fit for company. His family is corrupt. Look here, how the persons sell their honour for a silver bullet. This thing too is common everywhere. This is malice to society. Last portion of your programme, after sufficient destruction, will be for their character building. You will do this thing here in this world and after it, i.e. when you are gone from this world. I will tell you the way to, and the actual places where this thing is carried on. **You will fill the germs of destruction at these places.** I lead you to that way and corner. Your disciples are not allowed to cross the ways unless you are with them. These places can disbturb them.

श्री कृष्ण जी महाराज: कल की बात मेरी अधूरी रह गई। मेरा यह टिका सिर रहा है, उस वक़्त जब कि मैं लड़ाई की मुहिम में जा रहा था। **फल्गू नदी** के क़रीब ठहरे थे। जगह दूर है। अगर चाहो तो बता दूँगा। इस से हट कर **जरासन्ध** की राजधानी थी। यह एक

बहुत ताक़तवर राजा था। **चित्रलेखा** में वो कमाल और अनुभव शक्ति है जो इस वक़्त बड़ी से बड़ी तरक़्क़ी याफ़्ता रूह में पाई जाती है। यह लड़की **बाणासुर** के यहां पैदा हुई थी जिस को ईश्वर की ज़ात से कोई लगाव न था। इस का क़िला अपनी जगह पर जहां का यह बादशाह था, बना हुवा है। चिन्ह अब भी मौजूद हैं।

6.4.49 (वक़्त 11 1/2 बजे दोपहर)

चैतन्य महाप्रभुः नदिया का काम कर के जाना। कुल जगह, जहां पैदा हुआ, चार्ज कर देना। तमाम फिरा, ऐसा कोई न मुझ से बन सका जैसा तुम्हारे गुरु महाराज ने तुम को बना दिया। यह अपनी क़िस्मत और sacrifice है और ईश्वर की देन। तुम्हारे वाक़यात् जिस वक़्त दुनिया वालों के सामने जावेंगे, ताज्जुब करेंगे। वाक़यात् उन को ख़ुद यक़ीन दिला देवेंगे कि हां कोई हस्ती ज़रूर ज़रूर गुज़र गई है। **गांधी** बेचारे ने सिर से पैर तक कोशिश की। जेल काटी मगर नतीजा मत्लूब न ला सके। उस वक़्त तक जब तक कि तुम ने एड़ न लगा दी। यह ज़रूर है कि कामयाबी का सेहरा **गांधी** जी के सिर रहा और तुम ग़रीब को किसी ने न जाना। तुम्हारी 2 1/2 बरस की मेहनत ने सल्तनत को उलट दिया और वो भी औसतन पांच मिनट रोज़ाना के हिसाब से रही होगी। ग़लती **गांधी** जी ज़रूर कर गये कि इतनी जल्दी ही आज़ादी के **पाकिस्तान** होने की इजाज़त दे गये। अगर वो ऐसा न करते, सल्तनत तो उलट कर ही रहती और राज (राज्य) तुम्हारा होता। तुम्हारी will ख़ाली नहीं जावेगी। कभी देर सवेर दूसरी बात है। क़ुदरत का काम कितना आहिस्ता-आहिस्ता होता है,

और जब पक पका कर तैयार हो जाता है, एक दम से अक्सर भभूका फूटता है और कभी-कभी आहिस्ता-आहिस्ता भी सुलग-सुलग कर कुल ख़िर्मन को तबाह कर देता है। ख़ुश रहो।

अब दूसरी बात शुरु होती है कि मेरा काम अब कौन करे। फ़ना मैं तुम में हो चुका हूँ, उसी तरह से जैसे और बुज़ुर्ग होते हैं। मगर तुम्हें स्वामी जी महाराज और लाला जी से फ़ुरसत नहीं मिलती और हर बात तुम उन बुज़ुर्गों से पूछते रहते हो। इसलिये मेरी फ़नाईयत का एहसास नहीं होता। वरना मैं बिल्कुल ऐसा ही तुम में फ़ना हूँ जैसे कि और बुज़ुर्ग। यह ज़रूर है कि महात्मा **रामचन्द्रजी** महाराज ने जिस ढंग से फ़नाईयत की है, उस तरह से कोई आज तक लय नहीं हुआ। यह इस दुनिया में पहली मिसाल है कि गुरु शिष्य के लिये सरगरदाँ फिरे। गुरु भगती की मिसाल तुम से अच्छी कहीं नहीं मिलती। इस से लाज़िम था गुरु के लिये कि फ़नाईयत की मिसाल भी ऐसी कहीं न मिले और यह उस भगती का जवाब है। सीखने वाले तुम्हें नहीं मिल रहे हैं, मगर धीरे-धीरे सब सुलग रहे हैं। जो जगहें तुम ने charge की हैं वहां पहुंचने से उन में लगभग ऐसा ही असर पैदा होता है जो तुम्हारी तवज्जह से। अब **गया** के काम में मस्रूफ़ हो। मैं स्वामी जी को मुबारकबाद इस बात की देता हूँ कि उन्होंने भी बहुत हिस्सा गुरु महाराज की तरह का तुम से निस्बत रखते हुये लिया है। उन की भी क़िस्मत थी कि ऐसा शख़्स उन्हें मिल गया। और है मेरी भी क़िस्मत कि ऐसा शख़्स इन्तख़ाब किया जिस से जो चाहूं काम ले सकता हूँ। वरना सिवाए इस के कि चुपचाप बैठा रहता जैसे बरसों बैठा रहा हूँ।

बुद्धजी महाराज: स्वामी जी महाराज ने कह दिया है कि **बुद्ध गया** जाना। यह मेरी ही तरफ़ से था। बड़ के दरख़्त की जगह जहां पर मेरा तपस्या करना कहा जाता है, ऐसा चार्ज करना कि तमाम उम्र ऐसा न किया हो और ज़मीं हर वक़्त फ़ैज़ उगलती रहे। खोपड़ियां बन्धती रहें जो वहां ज़ियरत के लिये जावें। कसर न छोड़ना।

हज़रत क़िब्ला: महात्मा बुद्ध ने जो कुछ फ़रमाया है वैसा ही करना। मगर मैं इस बात की इजाज़त नहीं देता कि कसर न छोड़ना। अगर इस इतने टुकड़े की पैरवी की जावे तो दिमाग़ की नसें वहां जाने वालों की फटने लगेंगी।

S.V.: You are doing the business to my utmost satisfaction. Do it. Success will attend you. To you, this work is a childish game. You can do this work in a minute. The capacity you have been bestowed with, we know and our God. Going back.

Handle the ears of the sage of Bihar. He is away from duty for some time past.--- Alright, I am giving him my command.

(The following command by Swamiji to the sage of Bihar was overheard by me)

"You will be pulled down instantly if you are away from duty assigned by our masterly sage, commanding us. There is no reason why you should be busy with your work

when your Master is here."

बिहार के ऋषि का जवाब: मैं छमा (क्षमा) मांगता हूँ। काम में मसरूफ़ हो रहा था?

(ड्युटी फिर ले ली)

S.V.: You will have to set right the **Hindu Society**, gone down to such an extensive degree. Certain elements must be made to disappear.

हज़रत क़िब्ला:आज का काम अच्छा रहा। थोड़ा-थोड़ा **नदिया** का काम भी करते चलो।

7.4.49 (7.10 am)

S.V.: Your work yesterday has been exemplary. You will be succesful without fail. This is a childish game for you.

हज़रत क़िब्ला: भाई **रामचन्द्र**! महात्मा लोग अपना-अपना office छोड़ रहे हैं।

S.V.: I am vacating my office from this very time and moment (7.15 am) and establishing you there on my job. Your responsibility becomes greater now. I shall be present just like your Guru. When a higher personality comes into existence, we glitter like the morning stars.

Our work is finished. Your regime follows. Work with **Lord Krishna** hand in hand. We hand you over to Him. Follow Him. Is it not a mystery in the eyes of the public? Will they take it to be true? This is the problem which will be solved after hundred years. My Guru is pouring benedictions upon you. He made me, and Lalaji made you. Now we are combined. Now you have come from the same machinery of ours. You are one. Our work is finished. Sun shines, stars fade away. Look to our president, the highest authority of our Sanstha. Have you examined him? He is sleeping in the deep slumber and my Sanstha is gone. He is doing public work in the best possible manner but not the spiritual sort of business needed for the time. Really speaking, your Lord has also lost his Sanstha, so to say. The new one came into being. Of course, He is the head, you are the body, the nerves and the soul. Mind cannot work unless nerves are correct. So the principal head you are of your Sanstha issuing forth from the Centre.

These are orders from the Base and we are powerless.

हज़रत क़िब्लाः एक बात और लिख लो। यह बरकत **चैतन्य महाप्रभु** की है और ग़ालिबन् यह बात किसी जी रूह को नसीब नहीं हुई। **ईश्वर की याद करना, मौत के वक़्त, लिखा है कि इस से फ़ायदा होता है। क्या यह ग़ैर मुमकिन है कि तुम्हारी याद उस वक़्त पर की जावे और फ़ायदा न हो।** तुम हो या न हो, यह बात

और है। कहता हूँ कि कमाल फ़ायदा होगा। **अगर तुम्हारी याद में रूह परवाज़ कर गई तो इस दुनिया में उस का आना नहीं हो सकता।** यह एक मिनट की याद का फ़ायदा है। जो लोग तमाम उम्र ऐसा करते रहे हैं, उन के रुत्बे का क्या ठिकाना। भगती (भक्ति) ईश्वर की मश्हूर है, कोई तुम्हारी भगती कर के देखे। तुम ने वायू मण्डल में वो असरात पैदा कर दिये कि तुम्हारे काम को दवामी तौर पर इस्तहकाम हो गया।

भाई, अगर **गया** करने वालों को सज़ा दी जावे तो क्या हर्ज है। अपना रुपया ख़र्च करते हैं और वक़्त भी, और कोई फ़ायदा नहीं होता।

(सवाल ख़ुद) सज़ा **गया** करने वालों की या कराने वालों की? किस की होना चाहिये।

हज़रत क़िब्लाः अच्छा जो मुनासिब हो, करो; ख़्वाह **गया** करने वालों को, ख़्वाह कराने वालों को सज़ा दो।

S.V.: How they have destroyed the **Hindu Society** for their own good. They are eating away the vitals of the **Hindu** nation.

Have they seen the scene at the river **Phalgu**. The people were sitting like dolls in the hands of Pandas. How dumb they are to be driven by the log of Pandas. The Personality to be worshipped is here, which nobody

knows.

I am giving warning to the **sage of Bihar** once more. He should leave all the work till you are here. I pull him down if he slacks in his duty.**(3.30 pm)**

I have given you dictation this morning that I have vacated my office and established you in my place. Reviving your memory you will come to the conclusion that the work is nearly finished. Is it not to soothe you that I have told you above that I have vacated my office in your favour after completing the work of **Gaya**. What remains to convince you that you are doing the work alright. I am sure if I order you rather request you to complete the work in an hour, you will be able to finish it long before the hour passes. But slow work I want. There is no hurry.

Ram Chandra! what are you thinking about? Is it the persoanlity to be crossed over? What is not possible for you when you can bring resurrection in a day? You have gone on such a state of perfect calmness and forgetfulness that you do not realise what you are. That is the difficulty in the way. You are successful and will be all your life.

8-4-49 (7.00 am)

S.V.: Your work at **Gaya** has been excellent. You have filled the air with religious rebellion. The ways adopted

by you are correct. Melancholy scene is present everywhere. Work of part destruction remains yet unfinished. You will have to stay here for three days more. Religious feelings are collapsed. That is the work done which I have described above.

हज़रत क़िब्लाः (10.30 am) भाई, तुम्हारा **मिस्र** (Egypt) जाना ज़रूरी है। कोई शख़्सियत तुम्हारे बाद ऐसी नहीं आ रही है जो इस काम को पूरा कर सके।

S.V.: You are the deliverer of **India**, and saviour of mankind from the cruel hands, savaged so far. Is it not then become necessary to study the situation prevailing in the different countries of the world? Is it not your duty now to visit these places where havoc has been wrought. You can best solve the problem of the world before you, by actually going into it. It remains for you to manage somehow. I want to send you to **Germany** and **Russia**, specially other countries must be crossed by you but these two countries (named above) require your help. **Great Britain,** of course, cannot be neglected. **France** you must see. This is the place of corruption. There you must go. I want to set up **Hindu Civilisation** in **Australia.** I do not want so much wealth in **America.** Be attentive now to **Afghanistan.** It must be washed over. Typical character and jungle habits must be removed. I do not want this sort of civilisation prevalent there. If you go to **Egypt,** do not fail to visit **Persia.**

9 -4- 49 (7.15 am)

S.V.: **Gaya** is over worked. You are going to **Budh Gaya.** I do not want that the power from the **Base** may be pointed out to the core because children and babies also go there. It is already charged due to penance of **Gautam Buddha**, although it has been spoiled to a certain extent by the scythe of time. Whenever one may go there, he may feel himself charged. The condition there is going down day by day. You should create the substance there for issuing forth the same power ever and after but this time when you go, you will charge it just as it was during the time of **Mahatma Buddha.** That is the limit to your work, not more than it, I want.

Budh Gaya (10.00 am)

S.V.: You are at **Budh Gaya.** The Bargad tree, if you want to find out is the place where you are sitting. During the time of **Mahatma Buddha,** the Bargad tree was in existence and the place you see about was covered with bushes and shrubs. The houses you see (on the side behind the temple) nearby were dens of beasts. No game was allowed here. He started teaching from this very place. He caught light at this very place. Light you know already - common in your Abhyas. It was no doubt the real one which made him so. Yours is another description of the Light, not commonly crossed over. That

is a very high thing, you are contemplating. The thing has been spoiled by the B----. His teaching was simple and based upon high ideal. People call him a man away from God. To their view no godly principles are found, but the highest philosophy and ethics we find in his teachings. Note, you are the only personality in which **Buddha** is absorbed, and you have been selected for the purpose. You are free to carry on his teachings to the hearts of common folks. Whatever lines you choose, you are free. Consider your philosophy and compare it with that of **Buddha.** The highest pitches you will find in his teachings. But nobody has gone so far or will ever till the world exists, as you yourself. There the philosophy ends and I cannot say what begins. The people will weep to see the dictation if followed after you. Nobody is coming to you for higher standard of training. No parallel you will find anywhere. You have started a new thing. The highest pitch starts from the very beginning in the heart of the abhyasi. Can anybody boast of the sort of teaching you impart; nobody but yourself. The people cannot understand these things. This is a new era in the spiritual history.

"See! the cattle are being driven to paradise." (Remarks on seeing a batch of persons offering **Pind** under the directions of a **Panda**).

Had anyone power to find out the correct place

where **Buddha** sat for meditation. None but yourself.

Gaya 9.4.49

चैतन्य महाप्रभुः भाई, तुम ने मेरा **नदिया** का काम ऐसा किया कि जी ख़ुश हो गया। मेरे बहुत से शिश्य हुये, कोई इस क़ाबिल नहीं कि अपना यह काम सुपुर्द करता। तुम्हारे गुरु महाराज की राय है कि इस से ज़्यादा **नदिया** पर अब मुख़ातिब न हुवा जावे।

S.V.: The remaining work can be done from your place. No presence is required for such type of work. This is your routine. But I want to keep you here for two days more.

B. Ishwar Sahai keeps along with you. He has tried his utmost to relieve you from troubles of the journey and the place. Such is the work required from a disciple. His presence with you will not go unrewarded. That is the sacred promise, I make.

Mahatma Buddha is satisfied with your work entirely and **Chaitanya Mahaprabhu,** too. Is it the work to be handed over to a crooked man of stunted growth in spirituality. Nobody seems fit for the task but yourself. They roll like stones. I want to send you to **Moscow**. There is no definite work for you there. How will it be possible for you? Is there anyone ready to send you there? If anyone attempts, liberation is sure for him, how much wicked he

may be.

10-4-49 (7.45 am)

S.V.: Your work is finished at **Gaya.** But I have detained you here for a day more.

I have pulled the **sage of Bihar** down. He is no longer a **Qutub (a godly post).** He is not fit for the job. He is akin to your Bhai Sahib (**Madan Mohan Lal**). I am not going to excuse him at all.

हज़रत क़िब्लाः भाई **रामचन्द्र**, बड़े-बड़े काम अज़ीज़ के सुपुर्द किये गये; कोई ऐसा न रहा जो कर न डाला हो। अब सवाल **Moscow** का है। बिला तुम्हारे गये हुये यह काम बन नहीं सकता। ईश्वर मालिक है, वो सब कुछ कर सकता है। इतने मुश्किल काम तुम्हारे सुपुर्द किये गये, सब ख़त्म कर दिये।

11-4-49

S.V.: See the kayastha brain. He is performing the thanks giving ceremony. How beautifully he expresses himself. It is the work of his own doing but he attributes the succes to us.

कबीर साहेबः भाई तुम **बनारस** जा रहे हो। **कबीर चौरा** उलट देना, यानी कोई फ़ैज़ बाक़ी न रहे। अब हम लोगों की ज़रूरत नहीं रही। बादशाहत तुम्हारी है। मेरी राय यही है कि **कबीर चौरा**

जिस में फ़ैज़ था, खींच लो। अपने लिये मैं यही कहता हूँ। बाक़ी हर बुज़ुर्ग को इख़्तियार है।

हज़रत क़िब्लाः भाई, अगर इन्सान अपने कामों को ईश्वर की तरफ़ से मन्सूब कर लिया करे, तो कितना फ़ायदा हो।

मैं कोई दौलत अपने पास रखना नहीं चाहता। ज़िन्दगी भर की कमाई तो मैं मुन्तक़िल तुम में कर ही चुका था, अब जो कमाता हूँ, मुन्तक़िल कर देता हूँ। इस से पेश्तर मैं ने दौलत कमाई हुई मुन्तक़िल की थी, चन्द माह ही गुज़रे होंगे। अब फिर मुन्तक़िल करता हूँ। ऐसे शख़्स के पास क्यों दौलत न मुन्तक़िल की जावे जो वाक़ई अहल है। हे भाई यह सब करिश्मा तगड़ी निस्बत का। नहीं, बल्कि कुलियतन् फ़नाइयत का। नहीं, नहीं, हम - आहंगी का। चीज़ रुकने नहीं पाती, बस वक़्त capacity बनाने में लगता है। उतनी देर के लिये मैं अपने पास रखता हूँ।

13-4-49 बनारस (11.45 am)

हज़रत क़िब्लाः मैं ने 12 अप्रैल को रास्ते में **बनारस** का काम दे दिया था, उसे तुम कर रहे हो। इस का चप्पा-चप्पा मुनव्वर कर दो। **गंगा** का Bed भी इस में शामिल है। इस के मुनव्वर करने से Public को बहुत फ़ायदा होगा। मन्दिरों को ख़ास तौर पर लेने की ज़रूरत नहीं। काम में जल्दी करने की ज़रूरत नहीं। देखो **बनारस** को किस क़दर ख़राब किया गया है। अभी तुम ने वो corner देखा ही नहीं जहाँ corruption की बू आ रही है।

S.V.: It was the seat of learning in olden times. Vidya is still there. People (i.e. Brahmins) are earning now with the help of this sword (i.e. vidya). If it falls upon them, it will cut their own throats. The time has now come to banish these things totally from the place. Sword is needed everywhere and you are free to utilise it. It is within your working. The unworthy element must be put to bayonet. The instrument you have got. It is not the Western instrument as to fail anywhere! It is bestowed by Nature Herself. **Krishna Chakra** is the last weapon to utilise, but mind that it should not be used unless you are guided to it. Put out the light of **Pandas** altogether. This working you will do here as well as when you reach Shahjahanpur. A part of your programme you can hand over to Master Saheb (**Ishwar Sahai**) but an easy one should be imparted. Push you will give for its completion. He has got already one such power, given to him at **Gaya**. Work on.

मीरा बाई: तुम ने इन्तहाई तरक़्क़ी कर डाली, इस में शक नहीं। इस वक़्त तुम्हारी तवज्जह देने से बहुत कुछ मुझे एहसास हुवा। आगे तुम न बढ़े, इस लिये कि हुक्म न था। मेरी तमाम उम्र की मेहनत, परेशानी और मुहब्बत इस हालत को न पहुँचा सकी। **कृष्ण जी महाराज** को जाने क्या हो गया था कि इस तक उन्होंने भी न पहुँचाया। ठीक है इन्सानी पहुँच इन्तहाई है। यह तुम ने मुझ से क्या सवाल किया कि संस्था बढ़ती नहीं। और लोग फ़ायदा हासिल नहीं करते। जिस शख़्स को ईश्वर ने सल्तनत लौटने की ताक़त दी हो,

दुनिया को खण्ड मण्ड करने की ताक़त भी मौजूद हो, वो मुझ से यह कहे। सच तो यह है कि तुम्हारी तबीयत इस हद तक राग़िब नहीं होती वरना लोग पतंगे की तरह गिरें। क्या यह कोई मुश्किल बात है। नामुम्किन को तुम ने मुमकिन कर के दिखाया? **क्या स्वराज की उम्मीद हिन्दुस्तन को थी? क्या बात थी जो ख़ून बाद को बहा, पहले स्वराज मिल गया।** यह आप ही का करिश्मा था। दुनियाँ की ताक़तें यह नहीं समझतीं कि **हिन्दुस्तान** में वो जौहर मौजूद है जो ज़िन्दगी पलट सकता है। और **हिन्दुस्तान** इस से ख़ाली नहीं रहेगा। यह ज़रूर है कि ऐसी हस्ती फिर पैदा न हो। रोशनी अब भी मौजूद है। मैं तुम्हारे गुरु को धन्यवाद देती हूँ जिस ने ऐसी हस्ती बना दी। तुम लोगों ने इन को पहचाना नहीं और अब इन लोगों से कहती हूँ कि वो तुम को नहीं पहचानते। तुम्हारे लिये किसी चीज़ को पलट देना बच्चों का खेल है। मेरा दावा है कि इस वक़्त तक किसी में यह बात मौजूद नहीं है। इतने मुश्किल काम तुम्हारे लिये आसान होते हैं। मुझे तुम्हारे कामों की सब ख़बर है। तबीयत चाहती है ऐसे बच्चे को गोद में खिलाऊँ।

S.V.: It is the Commandment of Nature and everyone of us must obey. Ruler and Ruled are one as long as one is in the Nature, rather in the midst, losing its own identity so far as body permits.

In the woods, on the snow, if one is lost, he never returns. That is the highest stage of human approach.

Lakhimpur is the first place where your birthday is going to be celebrated for the first time. The place should be charged altogether. Every particle of the air and the earth should issue forth spiritual force in higher degree. Children should be safeguarded lest they suffer from suffocation. Wherever you may be on this date, you will do no other business but this one. I do not want this type of work all at once or suddenly. By doing this, sometimes shaking is produced which can put disorder in the pressure, and equilibrium is disturbed. The capacity you have been bestowed with, no doubt, is for doing higher sort of work. You should not save time in those things when you are meant for the purpose. I have to see your power at **Moscow.** You are free there, if with this body better. That will be the target of your will. Let us see how powerful **Russia** is before a Yogi of **India**, who has only a handful of bones and boney cheeks. She cannot stand before you, I challenge. Politician, no doubt **Stalin** is but he cannot stand in the world you are to make. Many personalities will disappear in the stroke.

14-4-49

S.V.: Peculiar are the ways of your working. Godly wisdom abides in you. Whatever work we have given you, you did it in right earnest and approached successfully. This is a tiny work you are doing at **Benaras**. You are going to **Allahabad**. I shall give you some duty there as

well. The last stroke of your weapon will finish the work. That should be utilised in the last, after (when) you have been sufficiently attentive to, and that too, not with full force. Vigorous attempt cannot fail. You are specially gifted with it.

क़िब्ला हज़रतः भाई, तुम ने मेरा नाम ज़िन्दा कर दिया।

S.V.: Work is still ahead. I shall pull down **Russia** and you will be my agency. Atmosphere of this place is sufficiently charged.

हज़रत क़िब्लाः यह वो जगह है जहाँ अच्छे-अच्छे महात्माओं के क़दम पड़ चुके थे। अब यह हाल है कि गन्दगी के सिवा अब यहां कुछ भी नहीं। क्या ज़माने के उलट फेर हैं। अब इस की हालत यह नहीं रहेगी। तुम्हारे पवित्र पैर इस पर पड़ चुके हैं।

सब को खो कर तुम्हीं को पाया और दो तीन तुम्हारे ज़रिये से रहे। ईश्वर इन को मुराद पर पहुंचा दे। तुम्हारे भाई साहब तो गये (इशारा बाबू मदन मोहन लाल से)

S.V.: He wants to put the liberated soul in the cage, which he cannot do.

15.4.49

हज़रत क़िब्लाः अब **बनारस** पर ज़्यादा तवज्जह करने की ज़रूरत नहीं; जिस से लोग ज़्यादा अकुला उठेंगे। यह असर यहां से

हट नहीं सकता।

नोट:आज सुबह 8 बज कर 10 मिनट पर **कबीर चौरा** का फ़ैज़ बहुक्म **कबीर साहब** खींच लिया। यहाँ का फ़ैज़ माँद पड़ चुका था, अब क़तई नहीं रहा।

हज़रत क़िब्ला: कबीर साहब ने अपनी संस्था ख़त्म कर दी। आफ़्ताब के आगे सितारों की चमक की ज़रूरत नहीं; इस लिये यह हुक्म दिया गया।

(Note: Left Benaras)

27.4.49 Lakhimpur

S.V.: See the power, **Choubey ji!** A minute's work has illuminated the whole body. Can you expect these things from barking dogs. This thing is rare even if a man falls in penance for a thousand years. So much time has been saved. It is difficult to gain so much by self-effort. Nobody has got eyes to see such work. The people are still sleeping.

नोट: 2 सितम्बर, सन 49 ई०, बवक़्त 10 1/2 बजे शब। गवर्नमेन्ट मौजूदा के बारे में एहकामें क़ुदरत नाज़िल हुये।

11.9.49

S.V.: Strength of **Vishnu** has been correctly

described in the book (Ref. **Efficacy of Raj Yoga**). What is said about **Narad** is entirely correct. The marred principles of **Hinduism** must disappear. This is a warning to the followers of **Vishnu.** They should see the correct thing given. Never mind if they tear away the book. It should be placed as it is. Never mind whether they agree with it or not. They must be washed away from the Society. You should do what is needed. You are changing the times. Your ideas must flourish. Let them be your deadly enemy. Never mind. What is said about **Rishi Agastya,** is as correct as anything. **Atri,** you have neglected. He is below the state of **Rishi Agastya.** Will they tear away your book? Let them do. You will have to put them on the point of bayonet. Time is coming. The very thing will be poisonous (for uprooting them). I do not want this sort of worship and bloodshed on this account. I want one and the same worship to be done by all. You have not written anything about **Shankaracharya** and other top most leaders of Hinduism, that is for fear only, although they have no connection with this book. You should deal with them separately. **Hinduism** is not the religion by itself. It is now the amalgamation of the different principles. **Vedic religion** is a pure one but is forgotten. The foundation of **Hinduism** stands on thousand basis prepared by selfish persons. Fear not boys; let him do his duty.

29.9.49

हज़रत क़िब्लाः यह इन्तहाई पहलू जो तुम्हारे लिये रखा गया है, मैं नहीं चाहता कि तुम अपनी क़ुव्वत से उस को (अपनी बीवी को) पहंचाओ। अपनी क़ुव्वत से अब उस को तैराकी ख़ुद करने दो। वो जितनी भी तरक़्क़ी ख़ुद करे। अगर तुम ने swimming की ताक़त यह ख़याल कर के देदी कि वो उसी corner पर पहुंचे तो वो भी वहीं पहुंच जावेगी। तुम्हारी तबीयत नहीं मानती, मैं मना करता हूँ। Liberation जैसे इस लड़की का हुआ है, मुँह चाहिये। और भाई, तुम्हें तो उस ने तकलीफ़ ही दी। मगर तुम्हारे stages बहुत कुछ उसकी बदौलत भी पार हुये। मुहब्बत इन्हीं वजहों से उस की ज़्यादा न बढ़ी। मगर वाह। फ़र्ज़ अदायगी करे तो ऐसी जैसे तुम ने की। और भाई तारीफ़ तो यह मेरी है। है कोई मर्द मैदाँ कि इतनी देर में इस हालत को पहुँचा दे। यह मेरी ही क़ुव्वत है। मेरी ताक़त तुम में काम कर रही है और तुम्हारी और मेरी कुछ नहीं। बस एक ही है। चाहे मैं कह लो चाहे तुम कह लो। **रामेशर** ने भी बड़ा काम किया। मगर तुम को इन मौक़ों के लिये उस को सिखाना पड़ेगा। **मास्टर साहेब,** देखिये, वाक़ई कमाल है।

S.V.: I tell you **Ram Chandra,** this is the first example in the history that during such a short period, a man could give the highest stage. Sanskars are still in deposit somewhere. Destroy them so that they may not affect you. It was my Lord only that when He liberated any soul, He took in Himself his Sanskars. Such a person is rarely given to the human beings. This (burning of Sanskars) is against the Law of Nature, at the same time

rarely accessible by human beings. This is the special power gifted to you. Only **Avtar** is bestowed with this power, and nobody else. **Lord Krishna** had this power. I tell you it is not necessary that every **Avtar** must have this power. **Lord Krishna** was the only personality of the time who had the power to burn down sanskars. You will not find such an example in history. You have done wonders. Was liberation possible for her, had she gone anywhere else as a wife? I do not think so. Your Guru was very kind to her. That was one of the causes of her liberation. Such a body must not have been put on fire, due to respect. It is not possible that her ashes be kept somewhere till your time comes. They are all charged and illumined. Wife of such a great man who met the same fate as others desire, must be preserved in ashes form. Wonder, you have sent her fit for godly work. I want to take work from her. Let her rest for a while. She will work beside you. You could not make a man as yet for the work ahead, but you made your wife in her dying moment. Is it not a pity that a living body may not reap such a benefit from you. Strange! Boys, do not hear what I say. There are very few ladies in the Brighter World who have attained such a high state. Is it not a lesson for you, boys? Free from all bondages, free from all limitations, free from all desires, free from every activity of life; free from worldly attachments, free from everything; she went to the Brighter World glittering. Such an example is not found that a man or woman may be able to attain such a high stage doing nothing in the

lifetime. We envy her condition. I mean to say that we have not got the seat here without doing what is required for this world. I was always in trouble during my lifetime and nearly everybody has tasted the same thing before coming to this stage of happiness and peace - everlasting and unbroken. I am going to her as she is my daughter. You are the sun and she is the moon. It is needless to send her ashes to the Ganges. They must be preserved. She is one of the highest personalities the world has ever seen.

हज़रत क़िब्लाः मुझे इस राय से क़तई इत्तफ़ाक़ है।

S.V.: I order you not to throw her ashes in the Ganges. They must be preserved. Such a high personality may not be washed off in the waves of the Ganges. Why not it may be kept in the monument or Samadhi as you may call it.

30.9.49

S.V.: Look here, **Ram Chandra**, this is the second personality in the world among women folk. So much power and so much sluggishness on the part of the members of the Mission. I tell you the secret that no personality is born yet to match you. This is above (beyond) what a man can think of. You are leading the life of an ordinary man here in this world but commanding the world, the Brighter One. This is the boon of your Master, the greatest teacher the world has ever seen. Nobody

could sacrifice as yet what your Master did for you. I am following his example but the method he did is beyond conviction. There are only two personalities, you and your Guru. You will be stayed here to complete the work, that is my prayer. Mission is like a small child leaping in your lap yet. Foundation you have dug and the stone erected. Sleep they will, I mean the members of the Mission. They are not making use of the time knowing that a personality like you is not coming for a very long time. They should devote themselves all the time to the sacred face and the bony cheeks. That is the only method for their salvation. If anyone does it, he will be successful. After you, the thing will not be very beneficial to them. It will only be for him who has done so in your lifetime. Atmosphere is full of spiritual energy this time. They can draw spiritual force from every nook and corner of the world this time. The days of **Lord Krishna** have been repeated this time and will be in full swing till your lifetime. Afterwards, like **Chaubeji's** saying that **Lord Krishna** cannot give salvation by the repetition of His name only. **Yama** cannot do anything in one's lifetime, if he dies before you having faith in and *tasavvar* (तसव्वर) of you. He is under your command and you are His master. You can change His post if disobedience occurs and appoint **Yudhisther** in His place for the work. Nature cannot check you but it should be done very rarely. Do not try to upset the work already in existence for only a trifling thing. I shall speak to **Lord**

Krishna (about) the instance occurred at the dying moment or before it regarding your wife. He will have to leave His work for three days as punishment and the charge will be given to the same authority (**Yudhisthira**) for three days. Anything more you want from Him. His work has been suspended from this very time (10.40 AM). **Chaubeyji,** your case is recommended by your sister (Babuji's wife). She had love for him during her lifetime. She was a good lady pure at heart but more attached to the world. Why did he not secure your order before entering the room, while you are his master. He must be punished. It was out of etiquette. Nature does not rest on him. If such case occurs again, he will be pulled down. Look here, the power of an earthly man! Nobody can imagine this. There is **Vedic Richa** also referring to this power bestowed on human being although very rarely (somewhere in **Rigveda).** Her bones are all charged.

3-10-49

S.V.: What else do you want? Taking care of your children has become the main problem. If somebody takes care of the children, the problem is solved. Your life is very dear to us. It was not advisable in any way that you give even remanant of it to others. As regards your wife, she breathed her last unattached to the world.

हज़रत क़िब्लाः भाई, तुम को मालूम नहीं कि तुम्हारी ज़िन्दगी

किस क़दर क़ीमती है। मैं तुम से नाख़ुश नहीं हूँ। इस का ख़याल छोड़ दो। अपने से नाख़ुश हूँ। भला यह मुम्किन है, अपने हाथों अपनी ही ख़ुदकशी करूँ।

S.V.: Your wife has not gone out. She has only changed her form, and is settled where one ought to settle after leaving the body. I am ordering a sage to look after your children during your absence. When you will be out of station it will be the duty of your Master to remain here in your place. As regards your bodily ailment you are suffering, she was not much useful to you. I think that is sufficient. You know you are the master of God's **Bishnu Shakti**. It is not above you. It can follow your dictate. Occasionally you can handover the charge of your children to the power specially when you are away from your home for Godly work or at any time you like. **Lord Krishna** has this special power. He has given you the power He had during His lifetime. But it is in dormant state and sleepy condition. Your body is not fit to keep it up in full swing. You can utilise that power when needed. It will work the same. How wonderful it is **Chaubeyji** - the initiated member of the Mission! The member is uncommon, no doubt, and rarely found. It is bestowed. There have been examples like that in the past, that one or other such power has been bestowed to a human being, but he (RC) is full of them. I have to take work from him here and afterwards, i.e. when he has gone from this

world. The difficulty is that he is in perfect state of forgetfulness. He (God) was Guru and he has no intention beyond. Still he is in the same condition. He does not remember what God is. As an etiquette some times he goes above (this state).

January 1950

S.V.: You have started a Mission in the name of a Master commanding the whole. It is but a baby in the (your) hand. Let it grow. It will gain supremacy throughout. This will be the only thing to remain as an initiative. Higher personalities will come in Sanstha. The reins of all the Sansthas have been drawn into one and the only thing. Do you think, **India** will rest here as you see today. It will stretch its arms throughout the Godly sphere, I mean the world.

29.1.50

S.V.: It will be the master like the day you have heard of; but you will make such day and time.

1.2.50 9.00 pm

S.V.: Save the life of **Nehru**, matter is keen. Devote some time at least today. **Kasturi** is far off. You cannot send your words instantly. These **congressis** I do

not know, what kind of creatures they are? They are filling their own belly. Robbers there you will find. They are like the police force who sell their conscience for silver bullets. I do not see any difference between them and policemen, except in the matter of speaking **Gandhiji ki jai.** Crush them, crush them! This is the only difference I find. Is this the human society under the head of **Gandhi?** I do not not want such creatures in India. They must be washed away. I do not want such kind of monuments in India. They are good for nothing. They are..... to the human society. Destruction will be ordered. You have to build your own society from which the people will come out like the spartans. The present day society is not worth keeping. This is dangerous in every respect. My Sanstha **Sahaj Marg** will go for ever - only, and no religious body - chalk out your programme in this way and make divisions. One purely religious body, the other purely political one, of course, of best character. I do not want the present day politics. This is Western idea flourishing in every brain. They have, of course, improved by dint of it, and they will perish only on this account.

Divide **India** in two groups as mentioned above. **Kasturi** can help you in this matter. Impart the work. Send it in a registered cover, writing on it confidential, but you will be responsible for her work; see if it is done correctly. Only Master Saheb can know all these things and nobody

else.

I do not want to see such Society as you have found in existence. Working should be done diligently. This is Godly work. Teaching is not as necessary as these things. Doom is inevitable. Nobody can avoid it.

I order you to go yourself to Lakhimpur and explain to her the methods. She is not an ordinary girl. She is burning like you, and acquiring the best stage. Inform the people of that place that you will be reaching on Saturday night, so that one may come to receive you at station. I shall give my dictates.

Work is now coming of most important nature. Be alert.

15.2.50

नोटः 6 फ़रवरी सन् 50 ई० को नूरचश्मी **कस्तूरी** को बमक़ाम लखीमपुर, मक़ामे **उलिया (पार ब्रह्माण्ड मण्डल)** की कुल सैर करा के मक़ामे **इब्द** में डाल दिया।

14 फ़रवरी सन् 50 ई० को गयारह बजे शब को नूर चश्मी **केसर (**कस्तूरी की छोटी बहन**)** को मक़ामे **कुबरा (ब्रह्माण्ड)** में डाल दिया गया। वो ऊपर जाने को बहुत हुट हुटा रही थी और ऊपर जाने की ताक़त ख़ुद न थी। इस लिये मेरी तबीयत भी उसी क़द्र उस को **कुबरा** में घसीटने के लिये हुट हुटा रही थी और बेचैन हो रही थी।

10 मार्च, सन् 50 ई० : हुक्म हुवा कि हिन्दु मुसलिम फ़िसाद जो शाहजहाँपुर में हो रहा है, ठण्डा कर दो। चुनाँचे तामीले हुक्म की गई।

S.V.: Boys, don't you pray for his health and long life. Nature does not want to keep him here. It is we who are checking him. Be in united form for prayer as said above, heartily. He will have more power after his death. Work is half-done. What sort of mentality you have got that you see your Guru shattered in health. Still you do not pray. That idea should come for itself. He is the example who prayed for his Guru. Why don't you follow him. You throw electric power by praying. That is the medicine for improvement. People want to take work from him but they do not give nourishment. By nourishment I do not mean food or milk diet etc. We want thought force in its place. Can you get such a good man? I think never, in many respects. That is the dictate for all the persons or disciples who have faith in him. It should not go in general hands. That programme should be a daily routine like pooja. People will also be benefited, not only **Ram Chandra** will reap benefit. That is a very important lesson. You should not lose such a man. What a good personality! who can change one in a minute if he so exercised himself. Do you want to leave him and to go in liberal hands of nature. Such personality should last. That is the importance of keeping him here, besides some other work. Going stages by stages and caring nothing of his master to keep him fit

for work. If so many prayers be offered, he is bound to improve and disease must go. In a way it will be a help to me. I give this dictation and you will - so many will - forget to do. **Lord Krishna** says, "I won't let him go unless his work is complete. But prayer must be done and help must be made for his bodily improvement." Rise you will all but during his lifetime. Afterwards faith and devotion can only attract him. Devotion to the Guru like him is the sure remedy of all evils. It can reach you to the best state of human approach. But Guru should be like him. Some are wasting their time in idle gossip; some in chit chat. They will weep after you. If they have sense of duty. A peculiar type of character is found in satsang; of course rare. One finds himself busy but really not. Let us see who does this prayer. Many will miss it. This is really devotion, if one is pained to see this thing in his Guru.

18-6-50

हज़रत क़िब्लाः ईश्वर की अपार दया ने यह दिन मुझ को दिखाया कि अज़ीज़म **पण्डित रामेशर प्रसाद** जी ने बमक़ाम **क़ुद्स (अवयक्त गति)** में जाय क़याम किया और सैर इस मक़ाम की कर दी।

25.6.50

हज़रत क़िब्लाः अज़ीज़म **पण्डित रामेशर प्रशाद** के पांच

circle के बाद जो ग्यारह circle हैं, उस में से तीन circle पार हो गये। चौथे circle में क़याम है।

26.6.50

हज़रत क़िब्ला: पंडित **रामदास चतुर्वेदी** वकील को आज सुबह इजाज़त शर्तिया दी गई। तरीक़ा बतला दें और तवज्जह दें। मगर initiate नहीं कर सकते।

आज बतारीख़ 26 जून सन् 50 बवक्त 9 1/2 बजे सुबह **पं रामदास जी चतुर्वेदी** वकील को इजाज़त शर्तिया हुकमन् दी गई। और इस के वो बहुत मुश्ताक़ थे। गुरु बनने के जज़बे को बहुत कुछ इस से पेश्तर ख़त्म कर दिया गया। मगर फिर भी एहतियात रखी कि इस का रंग कभी न आने पावे। इस चीज़ को ईश्वरी काम समझें और हर बात उसी की तरफ़ से मन्सूब करें, क्यों कि वो क़ादिरे मुतलिक़ है। और सब का गुरु। यह इजाज़त ब-सिलसिला सहज मार्ग है। तरीक़ा बता सकते हैं और तवज्जह दे सकते हैं, मगर initiate नहीं कर सकते। जुमला इजाज़ते ताले-हुक्म प्रेसीडेन्ट मिशन रहेंगा। उन को चाहिये कि मख़लूक़े-ख़ुदा की रूहानी मौलिद के लिये कोशाँ रहें और सब को भाई समझें।

दस्तख़त

हज़रत क़िब्ला, प्रेसीडेन्ट साहेब।

29.6.50

हज़रत क़िब्लाः मास्टर साहेब, आप की सैरगाह आलमे कुद्स है।

S.V.: He should devote himself to the service of the Mission. This should be his life long interest. I do not mean that he should not bring up children or make them able to seek their livelihood but his whole-hearted attention should be for the service of the Mission. Do you know the cause of the present state - the service of his Master - and the Mission abroad.

1.7.50 वक़्त 8.15 शाम

S.V.: I am translating the words of **Radhaji**. She is letting you prepare the field for her work. Let the bad time pass sooner, but after sufficient destruction. You are yet being late and the Nature is demanding change. **Radha** will work in this field with her hair down like **Kali's.** She is your sister. It cannot be said who is elder but you should work side by side when necessity arises. **Chakra** must return from **Russia** now. **India** will be the target. But wait for the orders.

8-11-50

S.V.: Change and Change. The book is published now.

रामेशर प्रशाद*: भाई, भावज को तुम ने बहुत ऊँचा पहुँचाया। आने पर मालूम हुवा। मगर मैं भी नीचा नहीं रहा। मेरे बाद तुम ने कुल stages पार करा दिये। और अब मैं वहीं पर हूँ। अभी सुसता रहा हूँ। और क़रीब-क़रीब सुसता चुका। मिशन का काम मैं हरगिज़ नहीं छोड़ूँगा। घर में जो कुछ अन्त समय में कहने वाला था, तुम जानते हो। घर के इन्तज़ाम से मुझे वास्ता नहीं, यह तुम जानो। मुझे मिशन से वास्ता है। मैं शुरु से जिस काम में रहा, उसी में रहूँगा। Consultation के लिये गुरु महाराज मौजूद हैं। घर में लखनऊ जाने के बारे में मेरी मर्ज़ी नहीं है। मेरी तबीयत का पता तुम्हें ख़ुद लग जावेगा। लोग (मतलब फ़क़ीर) ऐसे फूले फाले बैठे हैं, गोया क़ुदरत ने उन्हें सब कुछ दे दिया। और तत्व कुछ भी नहीं। रूहानियत गायब सी है। क.च. (**काल चक्र**) अब **हिन्दुस्तान** में चलना चाहिये। War आ रही है।

F.N.:*पंडित रामेशर प्रशाद की मृत्यु शाहजहाँपुर में 3.11.1950 को हो गई थी।

S.V.: He has grown arrogant of his power doubly sure. During the present state of his life he ought not to have entered into such a bad condition. If I order you to correct him, you can do so, no doubt. But why should I order you. He brought the force of **Russia** on **Tibet** by his will force. He could not catch the Nature's order correctly. Nature wanted it no doubt but not so soon. he has immense force no doubt created by his own self. That

was a blunder on his part. He is the master of himself. Nobody guides him.

Radhaji is waiting for the work again.

Pull him down if he does so in future.

18-11-50 वक़्त 8.20 शाम

हज़रत क़िब्ला: तुम ने मेरा नाम उछाला। हर बुज़ुर्ग मेरी तरफ़ देखता है, जब कोई काम पड़ता है, कि यह **रामचन्द्र** को हुक्म दे देवें तो हो जावे। चुनाँचे भाई, अब **नेपाल** को ग़ारत कर दो।

S.V.: I do not want the Brahmin supremacy there.

हज़रत क़िब्ला: मैं ने 12 मई के क़रीब Government के बारे में कुछ कहा था। यह इतनी निकम्मी निकली, जिस का ठिकाना नहीं। ऐसी गवर्नमेन्ट से बक़ौल शख़्से British Govt. बदरजहा बेहतर थी। उन को दूसरे के हक़ूक़ का लिहाज़ा था। अब इस को ढा दो, मगर foreign government नहीं आना चाहिये।

S.V.: Knock at the very root or head of the Govt. There are certain persons to be punished which will follow later on. I generally see that you do not exercise your brain in these matters. You are free to do what you think proper. They are not doing selfless service to the people and they have become arrogant of their power. I will say about it later on. **Moscow** is growing powerful. It is spreading poison in the world and **India** wants to copy it

out. This is not the way of progress or improvement which **Stalin** thinks of. World problem can be solved by **India** and **India** alone. She will glitter no doubt. But when? When those fools are out and sufficient destruction is done. I have told you so often that the structure of the new world will be erected on the bones. There is no remedy but what has just been said. **Kasturi** can do this (said above) i.e. about the Govt. very well. She can help you much. Such a girl should now be left wholly on this part of the work and such as follows after. You have given her which even you do not understand. A very high calibre she enjoyed as a spiritual girl. But it does not mean that your responsibility is shifted. You are the master, not of her but of the whole universe. Go to some doctor for Asthma treatment. This is a great drawback in old age and the work suffers on this account. I will speak to your Guru. Such a disease must not prevail. Be healthy and work. You have got disciples and they love you no doubt but I am sorry they do not exercise their will for your health although I have said once. This is the pious duty and better than any other duty, they have to perform. If only two persons **Master Saheb and Kasturi** - may exercise themselves willfully, the disease cannot remain. As for your stomach ache, that is the result of affection you had with your Master. There are other reasons too which your Master must have told you sometime back.

हज़रत क़िब्लाः कस्तूरी पूजा के पीछे पड़ी हुई है। मेरी समझ में

नहीं आता कि क्या इस ने यही पूजा समझ रखी है। अगर बन जावे। मगर **मालिक का हुक्म सब पूजाओं से बेहतर है**। इस से कह दो कि पूजा का वक़्त अब गया। तरक़्क़ी वो करती ही रहेगी बशर्ते कि वो ऐसा ही नेक ख़याल बनाये रहे। इस वक़्त मुझे काम की ज़रूरत है, जितनी जलदी ख़त्म हो जावे, अच्छा है।

S.V.: She should engage herself in working only. She receives hints sometimes for the work. Her intercommunion stage is developing but with you, of course, nor as much as is required. Inform her that her main goal now is to obey her master. He will not throw her in dungeon and she should help her master.

6-12-50

S.V.: Now the matter comes for Universal change. The date was 4th Dec., 1950 after 8.30 pm. You know how this change can be brought up. Adhering to the Centre as much as you can approach. This is not an ordinary thing, as you do for this world from the highest point ever cared for by the so called sages of the past. You should start work. Stars are losing their lustre. Sun's heat will remain as it is till your work is finished. Cleaning is everywhere necessary. You will find a few circles round the worlds in subtle form. You should break them. This is the case everywhere besides your world which you live in. The rest will follow when you do the work yourself. Be

assured you will finish the work. I want you should devote yourself a good deal to this task.

25.5.51

S.V.: The cause of creation which you call **Centre** is no doubt correct but let philosophers come to explain the impossibility. They can explain by reason. But reason does not always stand correct. The correct approach of a human being can only be of persons like you who are swimming in the desert. I think I am incorrect. Nobody is yet swimming but you. It is a specialty favoured by your Master. You can correctly catch but the dumb will not realize it. It is a long time to come before your solution will be thought correct. Nobody has attempted yet the root of existence of God. You are the first soul or person in this matter. The solution is totally correct.

There was space all over before and after creation. Suppose the space was in existence in **A** time, the formation of God began and took sometime for its existence. We see the space as endless thing so we say as well that God is eternal, because time cannot be foreseen. Time followed after and God existed before it. Then space is the mother for the creation of God. How was God created? Time is the negative state of its own and everything whatever it may be must have its end in endless form. Everything must have its governing agency

and the thing in existence must have its movement, however dim it may be. Invisible though it will be yet there it is sure to be so. If you move a ball, there will surely come a point which will be motionless. Similarly the motionless point of the space is God. Then who created God? The space! The people may again ask you who created the space? The need for God creation and for the Universe. It is and will remain eternal ever and after. The people will begin to worship space (आकाश). There is a hymn in the **Rig Veda** that they used to worship it in some form but the mystery was not open to them at that time. If you make yourself as such i.e. like the Akash or Space, you will reach its highest point automatically. That is the correct negation you try to do. When the mother is happy, her child will surely be so. If anybody serves your Master, you will surely be attracted. That is the best solution which can be expressed in words. Let your Guru speak on this point.

हज़रत क़िब्लाः भाई, solution तो ऐसा है कि इस का जवाब नहीं। और सही भी है बिला शुबह। मगर यह चीज़ दुनिया वालों को कैसे दिखाई जावे। जब कि सिवाये तुम्हारे और किसी का ऐसा ख़याल पैदा ही नहीं हुआ।

इस को लोग ज़रूर मानेंगे कि space या आकाश में कोई बनावट नहीं। न वहाँ ज़र्रात का गुज़र है। न चमक दमक का । वो एक ख़ालिस चीज़ है और solution का इज़्हार जो स्वामी जी ने

किया है, इस से अच्छा नहीं हो सकता। आवाज़ तुम्हारे पास इतनी dim आरही थी कि सिवाये ख़ास चीज़ की vibration के और कुछ ज़्यादा catch नहीं हो सका। इस लिये कि वो उसी हालत में बोल रहे थे, मगर इस solution को मानेगा कौन। किस की पहुँच है। यह मग़रबी लोगों की easy chair philosophy न समझी जावे।

S.V.: That is an addition to **Rig Veda.** It is the hymn. Had it been the **Vedic** time, the solution would have been added in mantra form.

कृष्ण भगवान: मेरे बहुत से भगत (भक्त) हुये, मुझ पर न्यौछावर रहे और अपना काम बना लिया। उन को मुहब्बत से ग़रज़ रही और वो उसी में अपने आप को रखे रहे, इस हद तक कि उन की अक़्ल की रसाई यहां तक नहीं हुई। ज़्यादा मुहब्बत में विवेक शक्ति जाती रहती है, मगर इन्तहाई मुहब्बत के सिरे पर यह शक्ति मौजूद है, जिस को अफ़ज़ल और आला कह सकते हैं। यहीं से बल्कि ज़रा आगे बढ़ कर वह्यी सही मायनों में उतरती है। क्या वैदिक ऋषियों की पहुंच इस से ज़्यादा थी? हरगिज़ नहीं। ब्रह्मचर्य उन का सही ज़रूर था जिस से उन को मदद् मिली। क्या यह चीज़ **ऋग वेद** में लिखने लायक नहीं है? इस चीज़ से दुनियाँ का कोई फ़िलास्फ़र इन्कार नहीं कर सकता जो तुम ने लिखी है। मुश्किल भी है और सहल भी। जिस को तुम ने **centre** कहा है, वो यही चीज़ है। ईश्वर बनने का जो process था, वही **invisible motion** है। और दुनियाँ की creation उसी से शुरु हुई है। और यह चीज़ eternal है। अब लोगों से कहो कि

ईश्वर ऐसे पैदा हुआ। इस में कोई ग़लती नहीं है। यह बिल्कुल सही है। यह **Reality at Dawn** में दिखा दो।

S.V.: **Rigveda** is silent at this point but it has some hint only.

Space and **time** are two different things. Space created time and not the time the space.

हज़रत क़िब्ला: एक चीज़ **आकाश** है और दूसरी **अवकाश**। **अवकाश, आकाश** की मोटी हालत है। अवकाश का यह सब पसारा है और आकाश का पसारा महज़ ईश्वर है।

S.V.: The Innermost Circle was the cause of God's creation. The outercovering resulted in making the Universe. The middle portion is the duration. If the middle portion and the outer coverings are removed, **Akash** remains which happens in **Maha Pralaya.** This is the **Identity** which turns into **Akash,** so to say, or the **Identity** is **Akash** itself.

8.6.51

हज़रत क़िब्ला: ईश्वर की आराधन (आराधना) यूं ज़रूरी है, हालांकि यह चीज़ ख़यालो है। इस चीज़ पर पहुंचने पर गुमाँ और ख़याल सिर्फ़ वहम मात्र ईश्वर का रह जाता है कि identity कभी merge नहीं होती। अगर तुम मेरा (हज़रत क़िब्ला लालाजी साहेब)

ख़याल लो तो identity मेरी भी बाक़ी है और मैं बहुत कुछ अपनी Identity का ख़ुद मोहताज हूँ। मैं ने ईश्वर का साथ नहीं छोड़ा, हालाँकि तुम्हारी निस्बत मुझे भी अपने पीर से मुहब्बत कम न थी। मैं समझता था यह नुक़्ता। इलावा इस के पीर भी कुछ हालत के बाद बराहे-रास्त ताल्लुक़ पैदा कर देता है। इस के मानी यह हैं कि अब बन्दगी की हद में क़ायम रह कर इस से काम निकालो।

Space के बारे में कहे कोई कुछ भी ले मगर उस में घटाव और बढ़ाव की सूरत ज़रूर मौजूद है। हालाँकि वो इतनी dim है कि समझ काम नहीं करती और न एहसास काम देता है। इस में हमेशगी है और रहेगी। अब जो चीज़ कि इस से बनती है, वो उसी की सूरत दूसरे तरीक़े में हो जाती है।

S.V.: It will puzzle the philosophers if this solution (problem) is solved. The thing is correct without doubt. But how to express it, is the most difficult.

हज़रत क़िब्ला: जहाँ **है** है, वहाँ **न** होने का शुबह भी है। इस के मानी यह हुये कि इन दोनों में कोई न कोई action ज़रूर है, वरना नहीं का शुबह न होता। अब यह action किस का है। उस को जो **है** और **नहीं** के दरमियान है। **ख़िला** है, उस के मानी यह हुये कि कभी नहीं भी था। यह सिर्फ़ महज़ शुबह मात्र है। फ़र्ज़ कर लो कि यह किसी वक़्त में नहीं था और जब हुवा तो इस के मानी यह हुये कि **नहीं** से **है** में आया। अगर यह चीज़ कह लो कि **ख़िला** नहीं है तो भी यह चीज़ पैदा होती है कि किसी वक़्त में था और अब मिट गया।

कब था और कब नहीं था। इस का जवाब यही हो सकता है कि जब था तब था और जब नहीं था तब हुआ। सिद्ध यह हुआ कि जो है वो नहीं होगी और जो नहीं है वो हो सकेगी। Negative से positive में आने के मानी यह हैं कि ज़रूर कोई action दरमियाँ में छुपा हुवा है।

हर चीज़ की दो हालतें होती हैं, positive और negative. अगर positive है तो उस का negative होना लाज़मी है और अगर negative है तो positive भी लाज़मी है।

एक बात और बता दूँ। अगर **ख़िला** की negative हालत तसव्वुर की जावे तो वो ईश्वर ही रह जाता है।

27.1.53

S.V.: Your Mission will glitter without doubt. Let the time mature for it. You have sown the seed of spiritualism throughout. Let the seed grow. I want in your lifetime. You are getting but a few hands, no doubt. Financial stringency is great but think of your Lord, how poor he was and the work he has done. I was getting a morsel sometime and bread like stones sometimes (i.e. as hard as a stone). I do not want you to be disppointed. Work for the sake of work. Do your duty. The result depends upon God, the Almighty... If you are troubled at the initiation of **Kamla Nath**. That will be broken instantly. If you cannot do, I will do it provided you decide the breaking of initiation. I do

not want to see you troubled. You have given the touch of spirituality anew to **India** and a bit abroad. Don't think that you are not doing your work. Of course the people are not coming to you under the banner of SRCM. That is sad.

हज़रत क़िब्लाः किसी step पर हिरासाँ न होना चाहिये।

S.V.: The governing agency is something else and you are a mere puppet in the hands of your Master. I must clear it. You are playing in the hands of your Master, doing what He wants.

The people of **England** are also now feeling the wave rather inspecting that volcanoe may become active at any time beneath **London**. **Gulf Stream** is changing its course and they know it already. **America** is not so much rich now as it was sometimes before, I mean a year or two before. It is of course a long time before **Deccan** becomes an island. Portion of **Bihar** will certainly go but after many shocks of earthquakes.

About the sun I have given dictation already somewhere. You can correct it at any time you like. But it is not necessary. This is the symptom for destruction.

Your prophecy is correct; what you have written in the book (**Reality at Dawn**) will come to pass. You have not written anything in the book about **Japan.** Her future is not glittering. (**Referring to India**). Glittering you are and

glittering you will be. You will shine as you did in the days of yore. (Referring to **U.S.-- Pakistan** military pact). These are the destructive pacts. **Pakistan** is going down day by day. Poverty is increasing. It will be the poverty stricken area.

19-6-55 (9.00 am)

S.V.: Don't gather moss and lichen on the calm surface of water. Dissect the limb that is diseased. Never mind if you are smaller in number. The number will increase without doubt and it will be within your lifetime. Have good hands and capable ones. The world is free from them; there are men. I give my judgment akin to your Guru's. **Chaubeji** can write to him a few lines only, and wait for the result. You have enough field before you. Take educated masses in your Sanstha. Intelligentsia I want, not the thorns of the bushes. The true seeker is of course, exempted and that you will know yourself. Education must be High School, if not more, although it is nothing considering the knowledge attended to. (I mean we must have persons of cultured brain). Organize and make the associates firm with regulations, of course, spiritual, they should be I agree with **Mr.Shukla** that a few among the villagers may be taken but after a hard test. Sectarianism must not creep in. We are all brothers, of course, everybody is free to follow one's specific ways and customs, but here we must be brothers. We should

render service needed without idea of caste or creed. That is must be the paraphernalia. Follow it strictly and begin Organization. You should keep yourself aloof and think them as condemned. The rest I will see myself.

20.6.55 (10.55 pm)

हज़रत क़िब्लाः मैं ने **लक्ष्मी चन्द्र** को बिलकुल खींच लिया, यानी सलब कर लिया। बाक़ी जो लोग उन से सीखते हैं, उन को तुम खींच लो। (चुनाँचे तामीले हुक्म कर दी)! इस क़दर मूंहज़ोरी मैं ने देखी ही नहीं। जिस सन्स्था से फ़ायदा हो उस के लिये ऐसे आवाज़े कसे जावें। ऐसे लोगों की मुझे ज़रूरत नहीं। ताल्लुक़ क़ताअ कर लो।

(इजाज़त जो **पण्डित लक्ष्मी चन्द्र** को जनाब प्रेसीडेन्ट साहेब ने अता फ़रमाई थी, वो कल ही automatically वापिस ले ली गई थी।)

30.6.55 (11.00 am)

हज़रत क़िब्लाः यह ठीक है कि Block दो होना चाहिये। एक में educated और दूसरे में uneducated। दूसरे Block वाले सतसंग में नहीं बिठाये जावेंगे बल्कि उन को अभ्यास बताया जावेगा। और फिर trainer का यह फ़ेल होगा कि वो मुशाहिदा करते रहें कि आया ब्रह्म विद्या की प्यास उन में बढ़ी है या नहीं। ठोसता की क्या हालत है। अगर प्यास बढ़ गई, उस हालत तक तो ब्रह्म विद्या यानी

असल चीज़ उन में दाख़िल करनी होगी, और जब तक इस में कमी रहे, तब तक यह तरीक़ा बज़रिये transmission नहीं अमल में लाना चाहिये। यह हो सकता है कि कुछ दिनों जैसा कि और लोग करते हैं, आप के यहां ठहर कर भी अपना बताया हुवा अभ्यास करते रहें। इस में कोई हर्ज नहीं, मगर meditation में बिठाने की ज़रूरत नहीं। दूसरा Block इस लिये क़ायम किया है कि वो भी फ़ायदे से महरूम न रहें। Workers सब educated होना चाहिये, इस लिये कि ऐसे लोग कम मिलेंगे, यानी अनुभवी कि बिना पढ़े हुये ही सब कुछ आ जावे। अगर ऐसा कोई मिल जावे तो काम उस के सुपुर्द भी किया जा सकता है। मगर ऐसे लोगों की ज़रूरत नहीं जो अपनी जगह से हटना ही नहीं चाहते। लाज़मी है कि अगर मेहनत की जावे तो वो लोग भी ठीक हो सकते हैं। मगर ज़रूरत क्या। हर कस-व-नाकस का इस में काम नहीं। इतनी ऊँची चीज़ है कि काफ़ी अनुभव करने के बाद समझ में आती है। ऐसे भी लोग होते हैं जिन को पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती और सब कुछ पढ़ जाते हैं। मगर ऐसे पात्र कामयाब हैं। मुश्क रत्तियों में मिलती है, याद रखना। Educated से मतलब है cultured brain से; दिमाग़ cultured होना चाहिये। वैसे educated class में भी uneducated मिलेंगे।

आठवाँ और अन्तिम भाग समाप्त

Glossary

शब्द	अर्थ
आज़ादी	स्वतन्त्रता
अरब देश	Arabia
अलैहदा होना	पृथक होना
आमीन	एवमस्तु, ऐसा ही हो, Amen
अज़ख़ुद	स्वयमेव
अहल	पात्र, क़ाबिल
असल	यथार्थ, वास्तविक
अमल	अभ्यास
अहकाम	आज्ञायें
अक्सर	बहुधा
अतिया	दान सम्पत्ति, भेंट, अपर्ण, gift
आग़ाज़	आरम्भ
असर	प्रभाव
अलबत्ता	निःसन्देह
अहमियत	महत्व
अज़मत	बड़प्पन, उच्चता
असल उसूल	वास्तविक सिद्धांत
आफ़ताब	सूर्य
अज़ीज़म	मेरे प्रिय, My dear
अफ़ज़ल	श्रेष्ठ

इरादा	विचार, संकल्प, intention
इनाने सल्तनत	हकूमत की बाग डोर
इश्रेअशीर	ज़रा भी
इमकान होना	सम्भव होना, संभावना
ईसार नफ़्सी	selflessness, स्वार्थत्याग
इस्तेहकाम	दृढ़ता, पुष्टता, स्थायित्व
इन्तहाई	चरम सीमा, अत्यन्त, परम
ऐब	बुराई, दोश
क़ुदरत	प्रकृति, Nature
क़ुव्वत	शक्ति
क़ुव्वते गोयाई	बोलने की शक्ति (Power of oration)
क़ानूने क़ुदरत	प्रकृति के नियम (विधान)
क़ायम रहना	स्थिर रहना, स्थापित
क़रीब	समीप, निकट
करिश्मा	चमत्कार, आश्चर्यजनक उपलब्धी
कुलियतन	सर्वथा, बिल्कुल
क़ादिरेमुत्लक़	सर्वशक्तिमान
कोशाँ रहना	प्रयत्नशील रहना
कमयाब	दुर्लभ
कस-व-नाकस	जैसा तैसा कोई भी (Every Tom, Dick and Harry)
ख़िलाफ़	विरुद्ध, विपरीत

ख़तूत	पत्र
ख़ला (या ख़िला)	space, आकाश
ख़्वाह	चाहे
ग़ालिबन्	probably, संभवतः
ग़ैर मुमकिन	असम्भव
ग़ारत करना	विनाश नष्ट करना
गुमाँ	भ्रम, संभावना, वहम, विचार
चाक करना	फ़ाड़ना, काटना
जाए क़याम	निवास स्थान
जंगजू	लड़ाका, रणवीर, योद्धा
ज़ी रूह	जीव, प्राणी
ज़ात	अस्तित्व, Being
जाए मुक़ाम	पड़ाव
यारा होना	शक्ति होना, strength
तेग़ा	तलवार
तमन्ना	इच्छा, कामना, तीव्र आकांक्षा
तार देना	पार उतारना, to deluge or overwhelm with
तहरीर	लिखावट, लेख
तामील करना	(आज्ञा) पालन करना
तालेअ हुक़्म	उदीयमान आज्ञा

ताल्लुक़ क़ताअ करना	सम्बन्ध तोड़ देना
तपिश	जलन, ताप, तपन
दवामी	शाश्वत
नाचीज़	तुच्छ, अकिंचन
नाज़ करना	अभिमान, गर्व, घमण्ड करना
नाज़िल होना	उतरना, अवरोही
नुकात	points, रहस्य, मर्म, सूक्षमता
पेश्तर	पूर्व, पहले
पैरो	अनुयायी, followers, अनुकरण कर्ता
पसारा	विस्तार
परदा	आवरण, curtain, veil
फ़नाइयत	merger, mergence, लय अवस्था
फ़ख्र करना	मान करना, गर्व करना, अभिमान करना
फ़ारिस	Iran, Persia, ईरान
बुज़ुर्ग	श्रेष्ठ जन, venerable, saints
बहुक्म	आदेशानुसार
बक़ौल शख़्से	as told by somebody
बराहे रास्त	by the straight path, directly
बज़रिया	by means of, with the help of
मजबूरी	विवशता, अस्मर्थता, निर्बलता, helplessness.
महक	गन्ध, सुगन्ध, ख़ुश्बू

मैसोपोटेमिया	Iraq, इराक़
मस्रूफ़	व्यस्त, लीन, संलग्न, busy
मर्देमैदाँ	वीर, बहादुर, brave man, man of action
मल्का होना	हस्त कौशल, महारत, expert
मुराद	इच्छा, अभिलाषा, उद्देश्य
मौजूँ	योग्य, उचित, appropriate, proper, उपयुक्त
मन्शा	अभिप्राय, आशय, इच्छा, कामना, उद्देश्य
मजबूरन्	perforce, आशक्त
मज़्कूरा बाला	उपर्युक्त, पूर्वोक्त, ऊपर कहा हुआ
मन्सूब करना	सम्बद्ध करना
मुनतक़िल करना	हस्तांतरित करना, स्थानांतरित करना
मुनव्वर करना	प्रकाशमान करना, दीप्त करना
मक़ामे इब्द	point of piety
मुश्ताक़	उत्सुक, उत्कंठित, अभिलाषी
मख़लूक़े ख़ुदा	प्राणीवर्ग, सृष्टि, God's creation
मुतलक़	परम पूर्ण, नितांत
मराक़िबा	ध्यान
मौजूदा	वर्तमान
मौलिद	जन्म भूमि, उत्पत्ति, पैदाइश
रहमत	दया, कृपा
रुख़ बदलना	दिशा बदलना, to change

राज़, रम्ज़	गुप्त भेद, secrets, रहस्य
राग़िब होना	उन्मुख होना, इच्छुक
लाज़मी	आवश्यक, अनिवार्य
लायक़	योग्य
लताफ़त	सूक्ष्म, पवित्रता, विनम्रता
लिहाज़ा	अतः, अतएव
वाक़यात	events, घटनाएं
वाक़ई	सचमुच, in reality, really
वतीरा	व्यवहार, प्रणाली, आचरण
सैराबी होना	सिंचित होना, तुष्टी होना
सल्तनत	राज्य, हकूमत
सिफ़्त	गुण
सैरगाह	place of stroll, क्रीड़ा स्थल, विहार क्षेत्र
सुकून	शान्ति
हिरासाँ	निराश
हक़ूक़	rights, अधिकार
हम-आहंगी	समरस्ता, सामंजस्य
हुक्म	आदेश
हक़ीक़त	याथार्थ, परम सत्य
हालाँकि	यद्यपि